चन्दामामा
मार्च १९६३
50
nP

डाबर
(डा. एस. के. बर्मन) प्राइवेट लि० कलकत्ता
बालामृत
(डाबर-बालामृत)
कैल्सियम
सोडियम
जिंजर या अदरक
व
डिल या मधुरिका
का
स्निग्ध-सार
आदि पदार्थ
इस मीठी
'पुष्टई' में
बच्चों को
सुलभ हैं
खेलते-खाने की
उम्र है इनकी,
ये ही तो परिवार
और राष्ट्र के भावी
कर्णधार हैं।
इनके स्वास्थ्य और
शक्ति के लिये
डाबर का
उत्तम
बालामृत

चन्दामामा

मार्च १९६३

Statement about ownership of CHANDAMAMA (Hindi)
Rule 8 Form IV), Newspapers (Central) Rules, 1956

1. *Place of Publication*	:	'CHANDAMAMA BUILDINGS'
	:	2 & 3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26
2. *Periodicity of Publication*	:	MONTHLY 1st of each Calendar month
3. *Printer's Name*	:	B. NAGI REDDI, Managing Director, The B. N. K. Press (Pvt.) Ltd.
Nationality		INDIAN
Address		2 & 3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26
4. *Publisher's Name*		B. VENUGOPAL REDDI, Managing Partner, Sarada Binding Works
Nationality		INDIAN
Address	:	2 & 3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26
5. *Editor's Name*	:	CHAKRAPANI (A. V. Subba Rao)
Nationality		INDIAN
Address	:	2 & 3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26
6. *Name & Address of individuals who own the paper*	:	SARADA BINDING WORKS : PARTNERS,

1. Sri B. Venugopal Reddi.
2. Smt. B. Seshamma.
3. Smt. B. Rajani Saraswathi.
4. Smt. A. Jayalakshmi.
5. Sri B. L. N. Prasad.
6. Sri B. Viswanatha Reddi.
7. ★ Kumari B. Sarada.
8. ★ Sri. B. Venkatrama Reddi.

★ MINORS

I, B. Venugopal Reddi, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

1st March, 1963

B. VENUGOPAL REDDI,
Signature of the Publisher

सर्दी-ज़ुकाम से छुटकारा पाने के लिये

वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड

लाल लेबल लीजिये

सिर्फ़ एक दवाई ही नहीं है बल्कि एक विश्वसनीय टॉनिक भी है।

इसमें ये चार गुण विशेष हैं जिनकी वजह से लोग पीढ़ियों से इसपर अधिक विश्वास करते आ रहे हैं।

१. वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड में 'क्रिओसोट' और 'गोयकोल' नामक पदार्थ भी मिले होते हैं जो बलगम का नाश करके फेफड़ों को साफ़ करने में मदद करते हैं।

२. वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड सर्दी-ज़ुकाम और खाँसी को दूर करके जल्दी आराम पहुँचाता है।

३. वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड दवाई भी है और एक विश्वसनीय टॉनिक भी है। यह शरीर को शक्ति प्रदान करता है।

४. वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड के उपयोग से शरीर के लिये आवश्यक धातुओं की कमी पूरी होती है, भूख ज़्यादा लगती है, खून बढ़ता है और हाज़मा भी ठीक रहता है।

वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड

लाल लेबल

वॉरनर-लॅम्बर्ट फ़ार्मास्युटिकल कम्पनी (सीमित दायित्व सहित यू.एस.ए. में संस्थापित)

मार्च १९६३

जनवरी का चन्दामामा पढ़ा। उस में 'व्यर्थश्रम' 'व्यर्थ अनुकरण' व 'गुलाम लड़की' बहुत अच्छी लगी। इस के अतिरिक्त, अन्य कहानियाँ भी अच्छी थीं। चित्रों में से अन्तिम चित्र भी बहुत अच्छा लगा जिस में कि नाउ-एन-ल्याई की पीठ पर चीनी सैना चढ़कर आ रही है। भारतमाता के किसान व शहरी लोग भी देश सेवा के लिए आगे बढ़ रहे हैं।

नवतेजसिंह, नई दिल्ली

मैं पहली बार मत भेज रहा हूँ। मैं दो साल से चन्दामामा पढ़ते आ रहा हूँ। मैंने आज तक बहुत-सी किताबें पढ़ी हैं। पर उनमें मुझे 'चन्दामामा' बहुत अच्छी लगी। इसके रंगीन चित्रों को देखकर मेरा मन खुशी से नाच उठता है। जनवरी १९६३ के अंक में भयंकर घाटी, व्यर्थश्रम, नौकर का तबादला आदि कहानियाँ बहुत पसंद आयीं और क्या लिखना! इस पत्रिका की जितनी भी तारीफ़ की जाय उतनी ही होने है।

प्रकाश मनोहर, नागपूर

चंदामामा में कुछ सामग्रियाँ एक विशेष स्थान रखती हैं जैसे, बेताल कथायें, धारावाहिक कहानियाँ, अन्तिम पृष्ठ, चित्र प्रतियोगिता आदि।

दास मास का स्तम्भ बंद हो जाने से उसमें कमी-सी आ गई है। अतः उसे पुनः शुरु करें अथवा कोई दूसरा उसी प्रकार का स्तम्भ दें।

चंद्रेशचंद शोला, कश्मीरोड

एक वैज्ञानिक बात...

मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि हमें अपने बच्चों की दूसरों के बच्चों से तुलना नहीं करनी चाहिए। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इससे बच्चों के स्वाभाविक विकास में बाधा पहुँचती है। यही बात मेट्रिक बाटों के सम्बन्ध में है। नये गुणों (और मेट्रिक बाटों) के गुणों को परखिये और उन्हें ज्यों का त्यों अपनाइये।

मेट्रिक तोल का जोड़-तोड़ करके सेर न बनाइये।

इसमें आपका समय व्यर्थ ही नष्ट होगा और लेन-देन में अक्सर नुकसान रहेगा।

सही और सुविधाजनक लेन-देन के लिए

पूर्ण अंकों में

मेट्रिक इकाइयों का प्रयोग कीजिए

डी ए ६२/१४७

कर्तव्य-
पालन में
सब से आगे...
जे.बी. मंघाराम एण्ड कं.
ग्वालियर और हैदराबाद
Royal Cream

चन्दामामा

संपादक: चक्रपाणी

देश में अभी संकट है, कुछ ऐसी परिस्थितियाँ पैदा हो गई हैं कि मुद्रण सामग्री बिना कठिनाई के नहीं मिलती। दाम भी आजकल काफ़ी बढ़ गये हैं।

हम चाहते थे कि कुछ भी परिस्थिति हो हम "चन्दामामा" के मूल्य में वृद्धि न करें। यदि हमें यह करना पड़ रहा है तो स्पष्ट है कि हम यह करने के लिए बाध्य हैं।

अप्रैल के अंक से "चन्दामामा" का मूल्य ६० नये पैसे होगा। और वार्षिक चन्दा होगा रु. ७-२० न. पै.

वर्ष: १४ मार्च १९६३ अंक: ७

भारत का इतिहास

घूरी मोहम्मद ने पहिले पहल भारत में ११७५ में मुल्तान पर आक्रमण किया। यह आक्रमण सफल रहा। पर जब ११७८ में इसने गुजरात पर हमला किया तो वह वहाँ हरा दिया गया। फिर भी उसने अगले वर्ष पेशावर को अपने वश में कर लिया।

इस समय गजनी का वंशज खुस्रो मलिक लाहौर पर शासन कर रहा था। घूरी मोहम्मद ने जम्मू के राजा से मैत्री करके खुस्रो मलिक को कैदी बनाया और उसको गजनी ले गया।

इस घटना के बाद पंजाब में गजनी के वंशजों का राज्य समाप्त हो गया। पंजाब के हाथ में आ जाने के बाद घूरी मोहम्मद को भारत के और प्रान्तों को वश में करने का मौका मिला।

इस समय में विशेषतः राजपूतों से और उनमें भी खासकर पृथ्वीराज चौहान से उसे लड़ना पड़ा। पृथ्वीराज दिल्ली और अजमेर का शासक था। कन्नौज पर जयचन्द्र का राज्य था। जयचन्द्र प्रायः काशी में ही रहा करता था। उस समय के मुसलमान इतिहासकारों ने लिखा है कि जयचन्द्र और राजाओं में अग्रणी था।

यदि जयचन्द्र और पृथ्वीराज में मैत्री रहती तो न मालूम हिन्दुस्तान में मुसलमानों की क्या हालत होती। पर उन दोनों में मैत्री न थी। जयचन्द्र को पृथ्वीराज से डाह थी। कहानी सुनते हैं कि जयचन्द्र ने अपनी लड़की का स्वयंवर किया और उसमें पृथ्वीराज को निमन्त्रित नहीं किया। और तो और उसने पृथ्वीराज की एक मूर्ति बनवाकर द्वारपाल के रूप में भी रखवायी।

परन्तु जयचन्द्र की लड़की संयुक्ता ने उसको ही जाकर जयमाला पहनायी। इस कहानी को जगह जगह गाया सुना भी जाता है।

११९० में जब पृथ्वीराज को मालूम हुआ कि घूर मोहम्मद बड़ी सेना के साथ भारत पर हमला करने आ रहा है, तो वह दो लाख घुड़सवारों को और तीन हजार हाथी लेकर और बहादुर राजपूतों को लेकर उसका मुकाबला करने निकला। ११९१ में थानेश्वर के पास तरायन में मुसलमान सेना का और पृथ्वीराज की सेनाओं का युद्ध हुआ। हिन्दू सेना ने घूर मोहम्मद की सेना को खूब तंग किया और अन्त में उसे हरा भी दिया। घूर मोहम्मद घायल होकर गजनी वापिस चला गया।

परन्तु अगले साल उसने और भी बड़ी जबर्दस्त सेना इकट्ठी की और उसी जगह पृथ्वीराज की सेना से मुकाबला किया। इस बार मुसलमान जीते। पृथ्वीराज शत्रुओं द्वारा पकड़ा गया और मार दिया गया।

११९२ में मुसलमानों की विजय के साथ जिसका भाग्य चमका उसका नाम था कुतुबुद्दीन ऐबक। यह कुतुबुद्दीन, जिसका भारत के इतिहास में विशेष स्थान है, तुर्किस्तान का गुलाम था। यह जब लड़का ही था, गुलामों के एक व्यापारी ने निशापुर लाकर एक काज़ी को इसे बेच दिया था। कुतुबुद्दीन को भी काज़ी के लड़कों के साथ धार्मिक और सैनिक शिक्षा भी दी गई। काज़ी के मर जाने के बाद उसके लड़कों ने उसको एक व्यापारी को बेचा, और उस व्यापारी ने उसको गजनी ले जाकर घूर मोहम्मद को बेच दिया।

कुतुबुद्दीन देखने में बड़ा बदसूरत था, पर उसमें कई अच्छे गुण भी थे। घूर मोहम्मद को उसपर बहुत विश्वास था। इसलिए उसने उसको अपनी अश्वशाला का मुखिया बनाया। युद्ध में भी कुतुबुद्दीन ने अपने मालिक की बहुत मदद की। इसलिए ११९२ के बाद भारत को जीतने की जिम्मेवारी उसने कुतुबुद्दीन पर डाली। क्योंकि उसके मालिक ने उसपर विश्वास किया था, इसलिए उसी वर्ष उसने हाँसी, मेरठ, दिल्ली आदि पर कब्ज़ा कर लिया। ११९४ में काशी और कन्नौज का राजा जयचन्द्र जब पराजित और हत हुआ तब घूर मोहम्मद को कुतुबुद्दीन की मदद भी थी।

११९७ में इसने गुजरात की राजधानी को लूटा। १२०२ में इसने कालिंजर (बुन्देलखण्ड) के किले को जीता और ५० हजार पुरुषों और स्त्रियों को कैद कर लिया।

घूर मोहम्मद का कुतुबुद्दीन यदि दाँया हाथ था, तो इख्तियारुद्दीन मोहम्मद उसका बाँया हाथ था। इसने बिहार और पश्चिम बंगाल के कुछ भाग जीतकर और भी कई प्रान्त जीतकर मुस्लिम राज्य में मिलाये।

अपने भाई के मर जाने के बाद १२०३ में, फरवरी में घूर मोहम्मद गजनी और दिल्ली का भी सुलतान बना। १२०५ में मध्य एशिया में युद्ध करके वह बदनाम भी हुआ। भारत देश में ही इसके साम्राज्य में अराजकता फैलने लगी। वह वापिस आकर इस अराजकता का दमन तो कर सका, पर इसके कुछ दिन बाद ही जब वह गजनी वापिस आ रहा था, तो १२०६ मार्च १५ तारीख को, रास्ते में कुछ हत्यारों ने उसको मार दिया। "सुलतान" की लाश ही गजनी पहुँच सकी और वहाँ उसको दफना दिया गया।

दास्य-विमुक्ति

बीते दिवस कई, विनता थी
बैठी उस अंडे के पास,
कब निकलेगा अंडे से शिशु—
यही लगाये थी वह आस !

विष्णुदेव की पूजा करती
कहती थी—"हे कृपानिधान,
मेरा पुत्र बली हो सबसे
हो मुझको उसपर अभिमान ।

शेषनाग से भी बढ़कर यदि
हुआ पुत्र मेरा बलवान,
तो मैं दूँगी सौंप आपको
होगा वाहन तेजनिधान !"

आखिर फूटा ही अंडा वह
मिटा तभी विनता का शोक,
निकला पक्षी एक उसीसे
फैलाता रवि-सा आलोक ।

बड़े-बड़े थे पंख, चोंच थी
बिलकुल वज्रकठोर,
अंगारे-सी चमक रही थी
आँखें रक्तिम कोर ।

लखकर ऐसा पुत्र तेजमय
विनता हुई निहाल,
लगी उसे छाती से चिपका
दुलराने तत्काल ।

एक पुत्र ही वह विनता का
कद्रू-सुत हज़ार,
किंतु तेज में उसके आगे
फीके पड़े हज़ार ।

कद्रू उसको तभी देखकर
गुस्सा बढ़ा अपार,
अन्दर ही अन्दर वह जलकर
बनती जाती क्षार ।

फिर तो अपने ही पुत्रों को
लगी डाँटने और मारने—
"निरे निकम्मे हो तुम सारे
हटो दूर, मत रहो सामने!"

सुनकर माँ की बात, शेष ने
कहा—"न माँ यों बोलो,
रह न सकूँगा अब इस घर में
कहना हो जो, कर लो!"

शेषनाग की बात सुनी जब
चढ़ा और गुस्से का पारा,
उल्टी-खरी फिर सुना-सुनाकर
कद्रू ने यों ज़हर उतारा—

विनता का लँगड़ा बेटा तक
बने सूर्य के रथ का चालक,
शर्म नहीं आती है तुमको
जन्म दिया मैंने ही नाहक।

जाओ, जहाँ तुम्हें जाना हो
तुमको है धिक्कार,
भार नहीं तुम मेरे केवल
धरती के भी भार!"

माता का यों क्रोध देखकर
शेषनाग बोला फुफकार—
"धरती को ही ढोऊँगा मैं
बन न सकूँगा भार!"

इतना कहकर उसी समय वह
चला गया हो क्षुब्ध,
कद्रू बैठी रही देखती
जलती-भुनती क्रुद्ध!

उस घटना के बाद एक दिन
थी वह शाम सुहानी,
मंद पवन था मन में भरता
पुलक मधुर अनजानी।

घूम रही थी कद्रू-विनता
सागर-तट पर मौन,
सोच रही थी क्या-क्या कद्रू
कह पाता यह कौन!

विनता थी निश्छल भोली-भाली
निर्मल बड़ा था हृदय,
बोल उठी—"दीदी, देखो तो
कैसा मोहक दृश्य !"

"हूँ" कहकर तब कद्रू बोली—
"उधर खड़ा जो घोड़ा,
देखो, कितना श्वेत मनोहर
नहीं मिलेगा जोड़ा !"

विनता ने भी देखा उसको
बोली—"हाँ, है सुन्दर,
सिंधु-फेन से उसके तन में
नहीं जरा भी अन्तर !

'उच्चैःश्रवा' अश्व यही है
रोम-रोम है श्वेत,
नहीं एक भी दाग कहीं पर
बिलकुल ही है श्वेत !"

बोल पड़ी तब कद्रू बोली—
"खूब गप्प है मार दी,
भला विधाता ने क्या तुमको
नहीं एक भी आँख दी !

अरी, पूँछ तो इस घोड़े की
साफ दीखती काली है,
कहती हो तुम, दाग न कोई
यह भी बात निराली है !"

विनता थी निश्छल भोली-सी
जिसका नहीं कुछ रहस्य,
बोल उठी—"दीदी, देखो तो
कैसा मोहक दृश्य!"

"हूँ" कहकर तब कद्रू बोली—
"उधर खड़ा जो घोड़ा,
देखो, कितना श्वेत मनोहर
नहीं मिलेगा जोड़ा!"

विनता ने भी देखा उसको
बोली—"हाँ, है सुन्दर,
सिंधु-फेन से उसके तन में
नहीं ज़रा भी अन्तर!

'उच्चैःश्रवा' अश्व यही है
रोम-रोम है श्वेत,
नहीं एक भी दाग कहीं पर
बिलकुल ही है श्वेत!"

ओठ चबा तब कद्रू बोली—
"खूब गलत है बात री,
भला विधाता ने क्या तुमको
नहीं एक भी आँख दी!

अरी, पूँछ तो उस घोड़े की
साफ़ दीखती काली है,
कहती हो तुम, दाग न कोई
यह भी बात निराली है!"

[२०]

[केशव और जयमल ने जंगली युवक की रक्षा की फिर उन्होंने उस सुरंग का भी पता लगाया, जिसमें से चण्डमण्डूकेश्वर चुपचाप भाग निकला था। इस बीच मण्डूक और एक अनुचर सुरंग में होते हुए जंगल के बीच में, एक उजड़े हुए कुंए में से बाहर निकले और ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक को बुरा भला कहने लगे। बाद में—]

चण्डमण्डूक के अनुचर को उसके सरदार का ब्रह्मदण्डी को बुरा भला कहना अथवा उसका सन्देह करना, बिल्कुल न जंचा। बहुत-सा धन देने के बाद, जयपुर राजा से यह वचन दिलाने के बाद कि आधा राज्य दिलवायेगा क्यों वह मण्डूक को मरवाने के लिए मनुष्यों को भेजेगा! नहीं नहीं, ज्येष्ठ और कनिष्ठ के बिना भयंकर घाटी में वह कुछ भी न कर सकता था। उसने मण्डूक से पहिले ही कह दिया था। इसलिए ही उसको पकड़ने का भार उन्हें उसने सौंपा था। इस ज्येष्ठ और कनिष्ठ के इस द्वीप में पहुँचने का अवश्य कोई कारण है!....

चण्डमण्डूक का अनुचर यह सोचता, अपने सरदार के सामने आया। उसने कहा—"मण्डूकेश्वरा! जल्दी न कीजिये।

मुझे सन्देह हो रहा है कि इन दुष्टों को अमदण्डी ने नहीं भेजा है। वह मान्त्रिक जिसने हमारी सहायता माँगी थी, क्यों हमें मारने की कोशिश करेगा? यह करने से उसको क्या फायदा होगा? ज़रा सोचिये तो........"

"सोचो....आराम से सोचो...." मण्डूक ज़ोर से गुनगुनाया। "तुम पहिले जाकर उस अमदण्डी को यहाँ बुलाकर लाओ। उसे पन्द्रह मिनट में यहाँ आ जाना चाहिए, समझे। यदि तुमने यह न किया, तो तुम्हारी चमड़ी उधड़वा दूँगा।"

मण्डूक के अनुचर को लम्बे लम्बे डग रखता, जल्दी जल्दी आता देख, पहाड़ के किनारे के तम्बुओं के आगे बैठे हुए मान्त्रिक अमदण्डी और उसके अंगरक्षक जितवर्मा और शक्तिवर्मा ने देखा।

नरभक्षक के इस व्यवहार को देखकर, उन तीनों को सहसा भय और आश्चर्य हुआ।

अमदण्डी ने जितवर्मा और शक्तिवर्मा की ओर मुँह मोड़कर कहा—"जितवर्मा, शक्तिवर्मा, देखो तुमने हमारी ओर आते मण्डूक के अनुचर की शक्ल! वह बड़े गुस्से में नज़र आता है। हम पर कोई आफ़त तो नहीं आयेगी!"

"सच महाराज, मैं तो यह कहूँगा कि इन नरभक्षकों से दोस्ती करना ही गलत है। मैंने बहुत मना किया, पर आपने सुनी नहीं।" जितवर्मा ने गुस्से में काँपते हुए कहा।

"यदि हम इनसे दोस्ती न करते, धन न देते, राज्य का लालच न दिखाते, तो मण्डूक कभी का हमें भून कर खा जाता। अब हम एक बार उसके हाथ में आ गये, तो हम क्या कर सकते हैं। हम असहाय हैं।" अमदण्डी ने कहा।

उनकी इस तरह बातचीत चल ही रही थी, कि मण्डूक का अनुचर उस तरफ़ जल्दी जल्दी आ गया।

आते ही उसने अक्षदन्ती की ओर गुस्से में देखकर कहा—"अक्षदन्ती, तुम्हारे दिन खतम हो गये हैं। हमारा सरदार तुम्हें ज़िन्दा ही भूनकर खा जायेगा। वह दान्त पीस रहा है। तम तमा रहा है।"

"मुझे! भूनकर खायेगा! आश्चर्य! मैंने उस मण्डूकेश्वर का क्या बिगाड़ा है! मैंने तो यह भी वचन दिया है कि असुर राज्य का आधा हिस्सा भी दिलवाऊँगा।" अक्षदन्ती ने खड़े होकर कहा।

"आधे राज्य की बात तो चन्द्रमण्डूक जानते हैं। तुम्ही ने तो हमारे सरदार को मरवाने के लिए, ज्येष्ठ और कनिष्ठ को भेजा था न!" मण्डूक के अनुचर ने पूछा।

ज्येष्ठ और कनिष्ठ का नाम सुनते ही, अक्षदन्ती मानसिक रूप से घबरा उठा—"हे कालभैरव! कितने दिनों बाद तुम्हारी भयंकर दृष्टि मुझ पर पड़ी है। ज्येष्ठ और कनिष्ठ क्या मिल गये हैं!"

फिर उसने शिखि और शक्तिवर्मा की ओर मुड़कर कहा—"तुम तो जानते ही हो कि ये जयमल्ल और केशव ही हैं। अब उठो, चलें। हम सीधे भयंकर घाटी की ओर ही चलेंगे।"

मण्डूक के अनुचर ने आगे आकर, अक्षदन्ती का हाथ पकड़कर, उसे एक तरफ़ धकेलते हुए कहा—"अरे, झूठ मत बक। तुम्हें किसने बताया कि ज्येष्ठ और कनिष्ठ मिले हैं। उन दुष्टों से बचकर जीते जी बाहर निकलने में मण्डूकेश्वर और मेरी जान ही निकल गई, समझे!"

"तो अब वे कहाँ हैं? क्या अब भी, मण्डूकेश्वर....भवन में ही हैं। चलो, क्षणों में उनको पकड़ लायें। चित्र, शक्ति उठो। जल्दी करो।" अखदण्डी ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा।

अखदण्डी मानिक की बातें और हावभाव देख कर मण्डूक के अनुचर को विश्वास हो गया कि वह निर्दोष था। वह पहिले से ही जानता था कि उसके सरदार का यह गलत ख्याल था, कि ज्येष्ठ और कनिष्ठ को, अखदण्डी ने भेजा था। अब उसकी बातों से यह और भी पक्का हो गया था। परन्तु मण्डूक के क्रोध को कैसे शान्त किया जाय?

मण्डूक का अनुचर, एक क्षण तक कुछ सोचता रहा, फिर अखदण्डी को दूर ले जाकर, इस तरह धीमे से बोला, ताकि चित्र और शक्तिवर्मा सुन न लें—"हमारा सरदार, तुम पर बड़ा बिगड़ रहा है। "उनको जो कुछ हुआ था, वह सब सुनाओ।" यदि तुम्हारे बहुत कहने पर भी कि तुम निर्दोष हो, वह न माने तो इस तरह दिखाना, जैसे कि तुम मन्त्र के प्रभाव में हो; और कह देना कि उनको भेजनेवाला चित्रवर्मा और शक्तिवर्मा हैं। उनमें से किसी एक की जान जायेगी और तू बच जायेगा।"

यह सुनकर अखदण्डी की जान में जान आयी। उसने धीमे से सिर मोड़कर चित्र और शक्तिवर्मा की ओर देखा।

फिर वह कहने लगा—"मण्डूक सेवकाग्रणी। जो तुमने कहा है, बहुत ठीक है। शास्त्रों में भी लिखा है कि एक महान व्यक्ति के प्राण रक्षण के लिए कई "अल्पों" का बलिदान देना ठीक है। तो चलो चलें। उन

मण्डूकेन्द्र के पास जाकर उनके दर्शन भाग्य पायें।"

मण्डूक के अनुचर ब्रह्मदण्डी के आगे आगे चलने लगा। पीछे आते हुए सिंह और शक्तिवर्मा ने जब देखा कि वे दोनों आपस में कुछ बातें कर रहे थे, तो उनको डर लगने लगा। परन्तु मामले का पता करना व्यर्थ था। क्योंकि द्वीप में, एक भी उनका सेवक न था—नरभक्षकों से भरा पड़ा था।

जब चारों चन्द्रमण्डूक जहाँ था, उस उजड़े कुएँ के पास आये, तो मण्डूक नरभक्षकों को कोई इशारा करता, बीच बीच में कुएँ में झाँक झाँककर ताक रहा था।

यह देख, उसका सेवक और ब्रह्मदण्डी चुपचाप उसके पास पहुँचे। मण्डूक उनको कुएँ के पास से, कुछ दूरी पर, पेड़ों के नीचे ले गया।

जान जाने के डर से ब्रह्मदण्डी को काँपता देख, उसने कहा—"ब्रह्मदण्डी डरो मत, मुझे सन्देह हो रहा था कि तुमने कोई धोखा दिया है। पर जंगल से आये हुये मेरे अनुचरों द्वारा अभी अभी मुझे मालूम हुआ है, कि वे ज्येष्ठ और कनिष्ठ कैसे इस जंगल में आये हैं। वे, गुलामों के झुन्ड में से अलग होकर, नदी में कूदकर यहाँ आये हैं। खैर, अब सोचने की बात यह नहीं है। वे दोनों, अब हमारे लिये पिंजड़ों में बन्द तोतों की तरह हैं।" कहकर उसने कुएँ की ओर देखा। "वे इस समय, मेरे भवन से, सुरंग के रास्ते यहाँ आ रहे हैं। उस सिरे पर मैंने अपने कुछ आदमी रखे हैं। और कुछ सैनिक उनको इस तरफ खदेड़ रहे हैं। हम यहाँ पर बैठे हैं

उनके कुँवे में से निकलते ही, हम उनको पकड़ लेंगे।"

मण्डूक के यह कहने पर, ब्रह्मदण्डी को जो आनन्द हुआ उसकी सीमा न थी। उसकी आँखों के सामने, धन सम्पदा से भरी भयंकर घाटी आ गई। उसने जित और शक्तिवर्मा के पास जाकर कान में कहा—"मण्डूक का कहा तुमने सुन लिया है न! केशव और जयमल को जीते जी पकड़ लो। शायद उनके पास हथियार हों। आत्मरक्षा के लिए, यदि ज़रूरत हो, तो जयमल को मार दो। परन्तु केशव को कोई हानि न हो।"

इसके बाद सब निकलकर कुँवे के पास गये और उसकी बगल पर बैठ गये। मण्डूक बीच बीच में उठता और अन्दर झाँक कर देखता फिर कुँवे की मुँडेर पर कान रखकर सुनता। "आहट हो रही है, वे इस तरफ़ ही आ रहे हैं।" उसने कहा।

जैसा चन्द्रमण्डूक ने सोचा था। केशव और जयमल जंगली लड़के के साथ उस ओर आ रहे थे। जब उन्होंने झोंपड़ी में सुरंग का गुप्त द्वार मालूम कर लिया और वहाँ के सब कमरे छान डाले, मण्डूक को वहाँ न देखकर, फिर वापिस ऊपर आने ही वाले थे तो उनको द्वार के पास किसी की आहट सुनाई दी। किसी को उसे खोलते देखा। तुरत वे खतरा ताड़ गये। मशालें लेकर, दूसरे सिरे की ओर चलने लगे।

"हम इस में हैं, यह मण्डूक के अनुचरों को मालूम हो गया है। वे हमारे लिये ही आ रहे हैं।" जंगली युवक ने कहा।

केशव ने सिर हिलाया। जयमल जलती मशाल को लेकर आगे आगे चल रहा था। "हम इस रास्ते चलें, देखें हमें यह कहाँ पहुँचाता है। एक ही रास्ता है। यदि मल्लूक ने दूसरे सिरे पर पहरा न रखा हो, तो हम जीते जी भाग निकलेंगे। यदि ऐसा नहीं है तो जब तक प्राण हैं, तब तक हम लड़ेंगे।"

"इसके सिवाय हम कर भी क्या सकते हैं। नरभक्षकों को बलि हो जाने से पहिले, कम से कम हम उनमें से कुछ को, तो अपनी तलवारों को बलि दे देंगे।" केशव ने कहा।

इस प्रकार वे सुरंग के मार्ग से, उनके कुंए के पास आ ही रहे थे कि उनको ऊपर कुछ शोर सुनाई दिया। तुरत आगे आया, जयमल रुका और उसने केशव से धीमे धीमे कहा—"हम जैसा कि डर रहे थे, वैसा ही हुआ। वे हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

केशव अभी कुछ कहने ही वाला था, कि पीछे से रोशनी लिये किसी का पास आना दिखाई दिया। तुरत तीनों ने अपने अपने हथियार सम्भाल लिये। केशव, जयमल को धकेलता हुआ आया। "पीछे

से आते हुए। सैनिकों के आने से पहिले ही, हमें आगे जाना होगा और जो अन्दर पहरा देने वालों को पकड़ना होगा। इसतरह हम जीते जी बाहर निकल सकते हैं।"

तुरत तीनों, जल्दी से आगे बढ़े।

"वे कुछ आ रहे हैं। उनको जीता ही पकड़ लो।" चन्दननन्दुक चिल्लाया। उसके अनुचर, शिव, शक्तिवर्मा हथियार लेकर खड़े हुए थे।

"केशव का कोई कुछ न बिगाड़े। बिना उसके भयंकर घाटी में हम कुछ नहीं कर सकते। शिव और शक्ति, सावधान। यदि उसका किसी ने कुछ बिगाड़ा, तो तुम को खड़ा खड़ा भस्म कर दूँगा।" मकरदंष्ट्री चिल्लाया।

मकरदंष्ट्री मान्त्रिक को, मानों जवाब दे रहे हों, केशव, जयमल्ल और वह जंगली युवक, एक छलांग में कुंये से बाहर निकले और शेर की तरह गये। उसी समय, पासवाले पेड़ों के पास से आवाज आई। "गुरु मौनानन्द की जय।" फिर एक ऊँची आवाज में किसी का कहना सुनाई दिया। "जो उस पेड़ पर २० योद्धा हैं। वे पहिले उतरें और इस मकरदंष्ट्री और मन्दूक को पकड़ लें। और जो जामुन के पेड़ के पीछे पचासों लोग छुपे हैं, वे कुंये में कूदें और सुरंग में से आते हुये नरभक्षकों को मार दें।"

यह आवाज सुनते ही "चन्दननन्दु का" चिल्लाता मन्दूक, "उपासकों के वट वृक्ष, कालभैरव," चिल्लाता मान्त्रिक मकरदंष्ट्री, कुंये के पास से कूदकर, जंगल में भागने लगे। (अभी है)

वचन-भ्रष्ट

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह फिर पेड़ के पास गया, पेड़ पर से शव को उतार कर, कन्धे पर डालकर हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, तुम किसी को वचन देकर उसे निभाने के लिए इतना कष्ट झेल रहे हो। अगर यही बात है, तो मैं तुम्हें दोष नहीं देता। क्योंकि वचन देकर न निभाने के कारण अभिजित नष्ट हो गया था। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, मैं उसकी कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यों कहानी सुनानी शुरू की।

किसी समय, मालव देश में, एक बड़ा योद्धा क्षत्रिय रहा करता था। उसका नाम अभिजित था। वह अधिक सम्पन्न न था। उसके पास एक गाँव था। उस गाँव के पास ही एक उसका पुराना किला भी था।

वेताल कथाएँ

अभिजित में जितनी कीर्ति की इच्छा थी, उतनी धन की इच्छा न थी। इसलिए वह किसी राजा के यहाँ नौकरी न करके किले में ही रहता आया था।

अभिजित जिस ग्राम में रहता था, उसके पास ही पहाड़ और जंगल थे। जब कभी उसकी इच्छा होती, तो वह पहाड़ों और जंगलों में—शिकार के लिए जाता। इस शिकार के कारण उसका तीरन्दाजी का अभ्यास बना रहता।

एक दिन यूँ ही, अभिजित शिकार पर गया हुआ था। वह दूर दूर तक जंगल में घूमता रहा, उसे प्यास लगी। वह पानी के लिए इधर उधर घूम रहा था कि उसको एक छोटा-सा झरना दिखाई दिया।

तुरत, अभिजित घोड़े पर से उतरा, झरने के पास आकर उसने अपनी प्यास बुझाई। जब पानी पीकर, उसने सिर उठाया तो उसके सामने एक बड़े पत्थर पर एक बहुत ही सुन्दर स्त्री अपने सिर के बाल सुखा रही थी।

अभिजित को आश्चर्य हुआ कि वह स्त्री, जो उसके पानी पीने से पहिले न थी, कैसे वहाँ एकाएक आ गई थी। उसने उससे पूछा—"तुम साधारण स्त्री हो? या अप्सरा?"

वह उसको देखकर हँसी और उसने कहा—"मैं वन कन्या हूँ। मेरा नाम चन्द्रमुखी है।"

जब उसे पता लगा कि वह साधारण स्त्री न थी, तो उसने चला जाना चाहा, पर चन्द्रमुखी का सौन्दर्य उसे आकर्षित करता रहा, वह उस पर से अपनी आँखें न उठा सका। क्योंकि अभिजित भी बड़ा सुन्दर था, इसलिए चन्द्रमुखी भी उसको देखती रही। यह देख कि वह उसकी ओर

स्नेह दृष्टि से देख रही थी। अभिजित भी उसके पास पत्थर पर बैठ गया और उससे गप्प मारने लगा। गप्प में समय हरिण हो गया और अभिजित को मालूम भी न हुआ। सूर्यास्त हो गया, अन्धेरा हो रहा था कि चन्द्रमुखी से उसने कहा—"अब मुझे घर जाना है, पर मैं अपने मन की बात कहना चाहता हूँ। तुम्हें छोड़कर जाने के बाद मैं सिवाय तुम्हारे किसी और विषय पर न सोच पाऊँगा। तुम्हें सोचता सोचता मैं सोना और खाना भी छोड़ दूँगा। इसलिए तुम मेरे साथ आओ। मुझ से विवाह करो। और मेरी पत्नी बनो।"

इसपर चन्द्रमुखी ने कहा—"तुमने मुझे देखा भी न था कि मैंने तुमको देखा और मैं तुमसे प्रेम करने लगी। जैसे तुम मुझसे प्रेम कर रहे हो, वैसे ही मैं भी तुम से प्रेम कर रही हूँ। मैं यद्यपि साधारण स्त्री नहीं हूँ, तो भी प्रेम के कारण मैं अपने लोक को छोड़कर तुम्हारे लोक में आकर तुम्हारी पत्नी बनूँगी। परन्तु एक शर्त है। मुझसे विवाह करने के बाद, तुम्हें किसी स्त्री के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए। यदि तुमने सोचा तो तुम्हारे प्राणों का ही खतरा है। फिर मैं जन्म भर दुःखी ही रहूँगी। यदि तुम इस नियम के पालने के लिए तैयार हो तो मुझ से विवाह करो।"

अभिजित ने हँसकर कहा—"यदि तुम मेरी स्त्री बन गईं, तो मेरा किसी और स्त्री के बारे में सोचना असम्भव है। इसलिए तुम मेरे साथ चले आओ।"

चन्द्रमुखी उसके साथ उसके किले में गई। उनका यथाविधि विवाह भी हो गया। ग्राम के लोगों ने उसे और उसकी पत्नी को भेंट, उपहार आदि भी दिये।

किसी ने भी यह भूलकर न पूछा—"यह स्त्री कौन है! कहाँ से आयी है! किस वंश की है!"

अब अभिजित के सुख की सीमा न थी। वह अपनी पत्नी को एक क्षण भी न छोड़ता। वह उसी को संसार समझकर, उसी में रम गया। उसे बस यही चिन्ता रहती कि उसके बल पराक्रम के अनुकूल किसी युद्ध में भाग लेने का मौका न मिला था।

जल्दी ही यह चिन्ता भी जाती रही। सामन्त राजा के पास के राज्य में एक युद्ध प्रारम्भ हो गया। गाँव गाँव में यह ढिंढोरा पीटा गया कि हर योद्धा आकर राजा की सहायता करे और उनको विजय दिलवाये।

यह घोषणा सुनते ही अभिजित की भौंहें फड़कने लगीं। जोश में उसका खून उबलने-सा लगा। उसने अपनी पत्नी से कहा—"मैं जाकर युद्ध में राजा की मदद करूँगा, उनको खुश करके, भेंट और उपहार लाऊँगा। सच कहा जाये, तो हम कोई खास सम्पन्न नहीं हैं।"

चन्द्रमुखी ने उसके जोश को देखकर कहा—"अच्छा, तो हो आओ। पर

जल्दी आना, तुम यह न भूल जाना कि मैं एक एक क्षण गिनती, तुम्हारी इन्तज़ार में मैं यहीं बैठी रहूँगी।"

अभिजित ने उससे कहा—"युद्ध खतम होते ही मैं चला आऊँगा। क्या मैं एक क्षण भी तुम्हें छोड़कर रह सकता हूँ ?"

वह अपने घोड़े पर सवार होकर अपने सब हथियार लेकर मालव राजा के पास गया। युद्ध हुआ। उस युद्ध में अभिजित ने राजा को विजय दिलवाई। राजा उसके पराक्रम पर मुग्ध-सा हो गया।

अभिजित इतने दिन चन्द्रमुखी को हमेशा याद करता रहा। आखिर जब वह युद्ध में शत्रुओं को मार काट रहा था तब भी उसके सामने चन्द्रमुखी का मुँह ही था। इसलिए उसने राजा के दर्शन करके कहा—"महाराज, मैं जिस काम पर आया था, वह हो गया है। अब मुझे आज्ञा दीजिये, मैं घर चला जाऊँगा।" उसने प्रार्थना की।

"अभी ही तो युद्ध समाप्त हुआ है। अभी विजयोत्सव भी नहीं मनाये गये हैं। यह कैसे हो सकता है कि तुम उन उत्सवों में न हो !" राजा ने कहा।

विजयोत्सव बड़े पैमाने पर मनाये गये। उन उत्सवों के दिनों में अभिजित की कीर्ति और भी अधिक व्याप्त हुई। पर चूँकि वह चन्द्रमुखी से मिलने के लिए उतावला हो रहा था, इसलिए उसने राजा से दूसरी बार विदा माँगी।

इस बार राजा ने कहा—"मैं तुम्हें आवश्यक पुरस्कार देकर भेज दूँगा।" असली बात तो यह थी कि राजा यह चाहता था कि अभिजित-सा योद्धा उसकी नौकरी में हो। राजा को यह बिल्कुल पसन्द न था कि वह घर जाये।
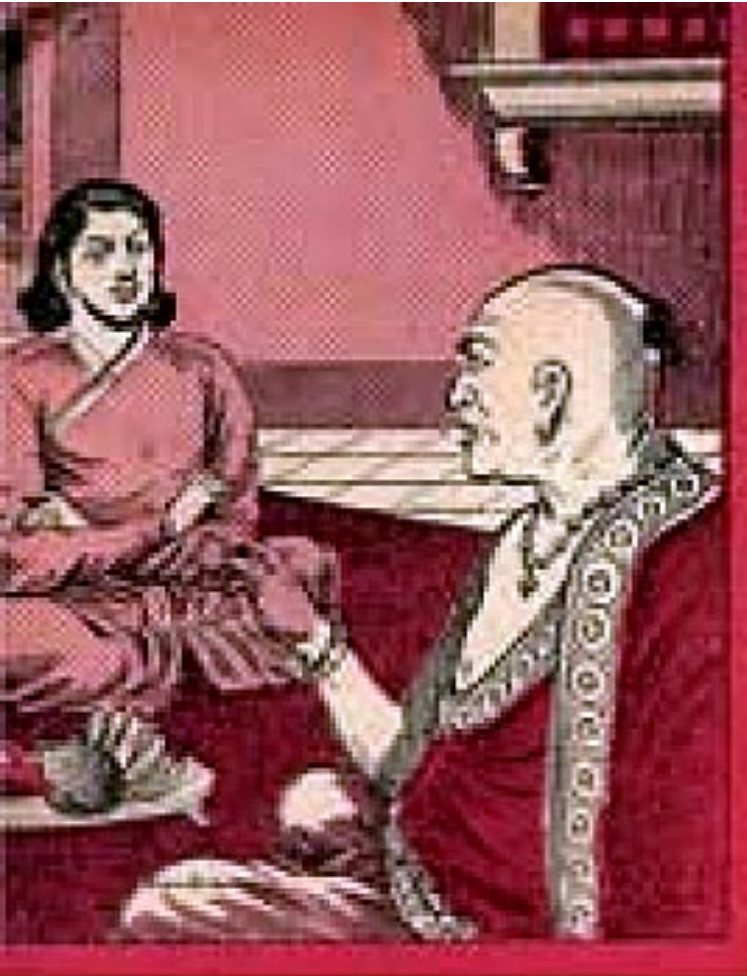
इसलिए कुछ दिनों बाद, उसने जब फिर तीसरी बार घर जाने की अनुमति माँगी, तो राजा ने कहा—"युद्ध में तुम्हारा शौर्य देखकर मैंने अपनी लड़की का तुमसे विवाह करने का निश्चय किया है। मैं जल्दी ही मुहूर्त निश्चित कर रहा हूँ। इसलिए तुम घर जाने का इरादा अब छोड़ दो।"

पहिले तो अभिजित को अपने कानों पर ही विश्वास न हुआ। कहाँ मैं मामूली आदमी और कहाँ राजा की लड़की! फिर राजकुमारी से शादी कैसी! इससे बड़ी बात मेरे जीवन में नहीं घट सकती, उसने सोचा। राजा की लड़की मोटी भी न थी। परन्तु अभिजित जितना चन्द्रमुखी से प्रेम करता था, उतना किसी और से प्रेम न कर पाता। उसको एक तरफ राजा का दामाद बनने की लालसा और दूसरी तरफ चन्द्रमुखी का प्रेम सता रहा था। वह क्या करे, यह निश्चित न कर पाता था, इसलिए वह एक पंडित के पास गया और उससे उसने अपनी सारी परिस्थिति कह डाली और उसकी सलाह उसने माँगी।

सब सुनकर पंडित ने कहा—"इसमें सोचने की क्या बात है! मनुष्यों और नाग कन्याओं का विवाह, बिलकुल धर्म के विरुद्ध है। वह विवाह ही नहीं है। उसके कारण, तुम्हें उत्तम लोक नहीं मिल सकते। इसलिए तुम तत्क्षण उस स्त्री को छोड़ दो, और राजा की इच्छा के अनुसार उसकी लड़की के साथ विवाह करना तुम्हारा कर्तव्य है।"

अभिजित ने राजा की लड़की के साथ विवाह करने का निश्चय कर लिया। उन दोनों का, शुभ-मुहूर्त पर विवाह भी हो गया। विवाह के बाद, अभिजित को, नदी-स्नान के लिए ले जाया गया। स्नान के लिए अभिजित ने पानी में जो डुबकी लगाई तो वह फिर ऊपर न आया। सैनिकों ने सारी नदी देख डाली, पर कहीं उसका शव भी न मिला।

अभिजित पानी में डूबा ही था कि उसके किले में चन्द्रमुखी का ज़ोर से चिल्लाना सुनाई दिया। उसका चिल्लाना सुन, नौकर चाकर भागते आये। परन्तु वह किसी को न दिखाई दी, और अदृश्य हो गई। फिर इसके बाद किसी ने उसको न देखा।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"राजा, मुझे एक सन्देह है। अभिजित ने जब स्त्री को दिया हुआ अपना वचन क्यों नहीं निभाया? इसलिए कि उसको उस पर प्रेम हो गया था? या इसलिए कि उस में राजा का दामाद बनने की इच्छा अधिक प्रबल हो गई थी? यदि इन प्रश्नों का उत्तर तुमने जान बूझकर न दिया, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"अभिजित की गलती राजा की लड़की के साथ विवाह करने में न थी। चन्द्रमुखी के लिए उसके प्रेम में भी कोई कमी न थी। उसकी गलती यह सोचने में थी कि चन्द्रमुखी से विवाह करने मात्र से जीवन पूरा होता था। पुरुष का जीवन केवल स्त्री के प्रेम से पूरा नहीं हो जाता। पुरुष के लिए कीर्ति भी आवश्यक है। अभिजित महायोद्धा था। इसलिए जब उसको अपना शौर्य और पराक्रम दिखाने का मौका मिला, तो वह अपनी प्राणों से प्यारी स्त्री को भी छोड़ कर चला गया। युद्ध के कारण ही राजा उस पर खुश हुआ था। इसलिए ही उसने अपनी लड़की का उससे विवाह करना चाहा। अभिजित के राजा के उपहार को इनकार करना जितना अनुचित था, उतना ही उसकी लड़की को इनकार करना था। यह स्वाभाविक था। राजा का दामाद बन जाना, क्योंकि उसकी कीर्ति का एक अंश था, इसलिए वह उसे भी अस्वीकार न कर सका।" राजा ने कहा।

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा। [कल्पित]

गन्धर्व सम्राट की लड़की

बसरा शहर में हसन नाम का एक नौजवान रहा करता था। हसन का अर्थ सौन्दर्य है, वह नाम उसके लिए सार्थक था, क्योंकि उन दिनों बसरा शहर में उसके जितना खूबसूरत कोई न था। क्योंकि अपने माँ-बाप का इकलौता था, इसलिए उन्होंने उसे बड़े लाड़ प्यार से पाला था और फिर उसका पिता उसके बचपन में ही गुज़र गया था। जो कुछ रुपया पिता ने बचा-खुचा रख दिया था, उसे हसन ने मित्रों के संग दावतों में, मज़े में उड़ा दिया।

उसके बाद उसकी माँ ने बड़े बाज़ार में अपने पैसे से जौहरी की दुकान खरीदकर दे दी। रोज़ वह उस दुकान में बैठा बैठा सोने के ज़ेवर बनाया करता। उसका सौन्दर्य आने जाने वालों को आकर्षित करता।

एक बार हसन अपनी दुकान में बैठा बैठा काम कर रहा था कि फारस देश का एक बूढ़ा, जिसने पगड़ी पहिन रखी थी, जिसकी बड़ी सफ़ेद दाढ़ी थी, उधर आता जाता, उसको देखकर रुका। वह कोई बड़ा बुज़ुर्ग मालूम होता था।

इतने में दुपहर की नमाज़ का समय हो गया। गलियाँ खाली हो गईं। बूढ़े ने हसन की दुकान में आकर उसको सलाम किया। हसन ने भी उसको सलाम करके उसको बैठने के लिए कहा।

बूढ़े ने मुस्कराते हुए कहा—"बेटा, मेरी कोई सन्तान नहीं है। तुम्हें देखते ही, मुझे तुम्हें गोद लेने की सूझी। मैं

अपनी विद्या तुम्हें सिखाना चाहता हूँ। मेरे बाद तुम मेरी इस विद्या का अभ्यास कर सकते हो। इस तरह जेवर बनाकर तुम्हें अपने स्वास्थ्य और सौन्दर्य को खराब करने की कोई ज़रूरत नहीं। मेरी विद्या इतनी बड़ी है कि उसे पाने के लिए हज़ारों ने अपनी जान कुर्बान कर दी है। तुम्हें देखने के बाद मैं यह विद्या किसी और को नहीं सिखाना चाहता।"

सब सुनकर हसन ने कहा—"अच्छा, तो मुझे गोद लेकर अपनी विद्या सिखाइये। कब सिखायेंगे?" उसने पूछा।

"कल" कहकर वह वृद्ध चला गया।

खुशी खुशी हसन ने दुकान बन्द की, जोश में भागा भागा अपनी माँ के पास गया। उसने उससे सारी बात कही।

उसने हसन से कहा—"क्यों बेटा, क्या फारसियों का विश्वास किया जा सकता है? वे अग्नि की पूजा करते हैं। वे सोना बनाना जानते हैं। पर जो उनकी दोस्ती करता है, वह मर जाता है।"

हसन ने हँसकर कहा—"माँ, हम गरीब हैं। हमसे कोई कुछ नहीं ले सकता। वह बूढ़ा, बड़ा लायक मालूम होता है। उसकी दया से हमारा फायदा ही हो सकता है।"

माँ कुछ न कह सकी। वह चुप रही और हसन इतने जोश में था कि उस दिन रात को वह सोया तक नहीं। अगले दिन सवेरा होते ही वह अपनी दुकान गया। थोड़ी देर में फारसी भी आया। उसने हसन को गले लगाकर कहा—"क्या तुम्हारी शादी हो गई है बेटा?"

"नहीं तो, मेरी माँ मुझे जल्दी शादी करने के लिए तंग कर रही है।" हसन ने कहा।

"वाह....मैं अपनी विद्या, ब्रह्मचारियों को ही सिखा सकता हूँ। क्या कोई पुराना ताम्बे का टुकड़ा है तुम्हारे पास!" फ़ारसी ने पूछा।

हसन ने एक टूटी हुई ताम्बे की तश्तरी दिखाई।

"यही चाहिये। इसके टुकड़े करके भट्टी में इसे पिघला दो।" बूढ़े ने इधर उधर देखते हुए कहा।

जल्दी ही उसने ताम्बे को पिघाला। तब बूढ़े ने उठकर कहा—"एक, मक, बक, ताम्बा सोना हो जाये" उसने तीन बार कहा, फिर पगड़ी में से उसने कोई पुड़िया निकाली उसमें से सिन्दूर के रंग का कोई चूरा निकालकर उसमें छिड़का, तुरत पिघला ताम्बा जम गया और देखते देखते सोना बन गया।

हसन यह देखकर चकित हो गया। जब उसने उस सोने को कसौटी पर घिसा तो उसने उसे अच्छा सोना पाया। उस सोने के लिए जौहरी अच्छा दाम देते।"
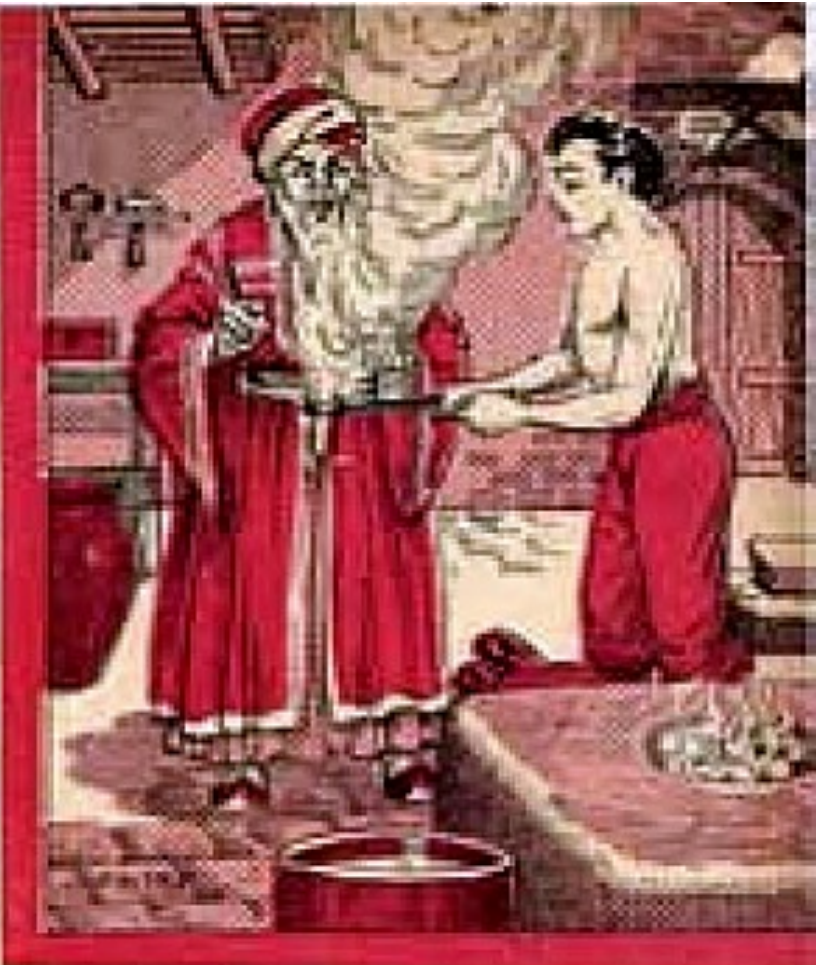
बूढ़े ने हसन से कहा—"इसे तुरत ले जाकर बाज़ार में बेचो और रुपया ले आओ। किसी से न कहना कि यह कहाँ से आया था!"

हसन ने उसे दो हज़ार दीनारों में बेचा। वह पैसा लेकर अपनी माँ के पास घर गया। उसको बताया कि यह सब बूढ़े की मेहरबानी से मिला था। इतना कहने पर भी उसकी माँ के सन्देहों का निवारण न हुआ। परन्तु हसन ने उसके सन्देहों की परवाह न की। घर की सब पीतल की चीज़ें लेकर वह दुकान की ओर भागा।

बूढ़ा अभी दुकान में ही था। हसन को पीतल की चीज़ों को पिघलाता देख, बूढ़े ने पूछा—"क्या कर रहे हो?"

"इसे भी सोना बना दूँ!" हसन ने कहा।

बूढ़े ने हँसकर पूछा—"एक ही दिन में तुम्हारे पास इतना सोना आ गया है यह देख क्या लोग सन्देह नहीं करेंगे? तुम अपना भेद कैसे रख पाओगे?"

"यह तो सच है, पर मैं आपकी विद्या जल्दी सीखना चाहता हूँ।" हसन ने कहा।

बूढ़े ने और ज़ोर से हँसकर कहा—"यह क्या कोई ऐसी विद्या है, जो बीच बाज़ार में सिखाई जाये? यदि सचमुच यह विद्या सीखना चाहते हो तो अपने औज़ार वगैरह लेकर हमारे घर आओ।"

हसन इसके लिए मान गया और बूढ़े के साथ चल दिया। जब गली में जा रहे थे तो उसको अपनी माँ का कहना ख्याल आया कि परदेसी नास्तिक होते हैं। वह चलता चलता रुका और सोचने लगा।

"बेटा, लगता है तुम्हें कोई सन्देह सता रहा है। यह विद्या मेरे घर सीखने के लिए यदि तुम्हें कोई आपत्ति हो तो मैं तुम्हारे घर आकर ही सिखाऊँगा।" वृद्ध ने कहा।

हसन ने सोचा कि ऐसा करने से उसकी माँ को सन्देह करने कोई मौका न रहेगा। वह इसके लिए मान गया।

बूढ़ा, हसन के साथ उसके घर गया, बूढ़े को बाहर बरामदे में खड़ा करके, हसन अन्दर गया। उसने उससे कहा—"माँ, वे हमारे घर ही आ गये हैं। हमारा नमक खाने के बाद वे कभी हमारा विश्वासघात नहीं करेंगे।"

"बेटा, ये सब बातें तो सोचते हैं, पर अग्नि पूजक नास्तिक यह सब नहीं सोचते। तुम्हारे भले के लिए मेरी चिन्ता चली गई है, यह न समझो, अतिथि होकर आया है, इसलिए उसके लिए खाना तो बना दूँगी पर जब वह अन्दर आयेगा, तो मैं वहाँ कहीं न होऊँगी। पड़ोस में चली जाऊँगी और उस आदमी के जाने के बाद ही आऊँगी।"

उसने तरह तरह के खाने बनाकर रख दिये। उनको परोसने के लिए रख, वह पड़ोस के घर में चली गई।

फिर हसन बूढ़े को अन्दर बुलाकर लाया, भोजन के लिए बिठाया। "हमारे घर भोजन करने के बाद हम दोनों में सम्बन्ध बन जायेगा।" हसन ने कहा।

"यह बड़ा पवित्र सम्बन्ध है। बेटा, यदि मुझे तुम पर प्रेम न होता, तो क्या मैं तुम्हें यह विद्या सिखाता!" कहकर वृद्ध ने पगड़ी में से एक पुड़िया निकालकर कहा—"देखो, इस चूरे से कितने ही मन सोना बनाया जा सकता है। इसमें हजारों जड़ी बूटियाँ मिलाकर, मैंने इसको तैयार किया है। यह कैसे बनाया जाता है, यह मैं तुम्हें सिखाऊँगा।" कहकर बूढ़े ने वह पुड़िया हसन को दे दी।

हसन जब पुड़िया को आश्चर्य से देख रहा था कि बूढ़े ने हसन की थाली में खाने की चीज़ में बेहोशी की दवा मिला कर कहा—"बेटा, खाओ तुम।" हसन एक कौर मुख में रखते ही बेहोश हो गिर गया।

"अब तुम मेरे हाथ से नहीं निकल सकते। आ बेटा...." कहता, बूढ़ा जहाँ बैठा था, वहाँ से उठा। बूढ़े ने उसके पैर छाती से बाँध दिये। पास रखे कपड़ों के

सन्दूक को उसने खाली कर दिया। फिर वह दुष्ट हसन को उस सन्दूक में रख, घर का सारा धन लेकर, बाहर गया।

एक मजदूर को बुलाया। उससे वह सन्दूक उठवाकर, वह सीधे बन्दरगाह गया। वहाँ एक जहाज तैयार था। जहाज का कप्तान, बूढ़े को देखते ही सन्दूक और उसे जहाज में चढ़ाकर, लंगर उठाकर, समुद्र में जहाज को चलाने लगा।

थोड़ी देर इन्तज़ार करने के बाद, जब हसन की माँ आयी, तो घर में हसन न था। न सन्दूक ही। पिछले दिन हसन जो पैसा, सोना बेचकर लाया था, वह भी न था। सन्दूक में जो कपड़े वगैरह थे, वे बिखरे पड़े थे। बाहर का दरवाज़ा खुला था। वह सिर पीटने लगी। अपने कपड़े फाड़ फाड़कर चिल्लाने लगी कि उसका लड़का, उसको फिर न दिखाई देगा। जो उसको डर था, वही हुआ।

उसको आश्वासन देने अड़ोस पड़ोस के लोग आये। उसने पिछवाड़े में एक समाधि बनवाई और दिन रात वहीं पड़ी पड़ी रोती रहती।

वह बूढ़ा जो हसन को उठाकर ले गया था, बड़ा मान्त्रिक था। उसका नाम बेहराम था। उसने अपनी विद्या के लिए कितने ही मुसलमान लड़कों को बलि दे दिया था, इस बार हसन मिला था।

जब तक जहाज समुद्र में रहा, बेहराम ने हसन को सन्दूक में ही रखा और उसे बेहोशी की दवावाला भोजन देता रहा। कुछ दिनों बाद जहाज किनारे पर लगा। बेहराम जब सन्दूक लेकर, किनारे उतरा, तो जहाज चला गया था। तब बूढ़े ने हसन को सन्दूक में से निकाला—उसकी रस्सियाँ खोल दीं। फिर उसकी बेहोशी

दूर करने के लिए उसने दवाइयों का सुगन्ध सुँघवाई ।

हसन ने जब आँखें खोलीं, तो वह समुद्र के किनारे था, पर वह जान गया कि वह उसका देश न था। क्योंकि उस समुद्र के किनारे रेत में काले, सफ़ेद, लाल और हरे पत्थर थे। जब वह आश्चर्य में खड़ा हुआ, तो पीछे एक पत्थर पर उसको बूढ़ा दिखाई दिया। हसन जान गया कि वह ही धोखा देकर उसको यहाँ लाया था, उसकी माँ ने जो कहा था, वह बिल्कुल ठीक था। उसने उस बूढ़े के पास जाकर कहा—"यह सब क्या किया आपने पिता जी! आपने तो हमारे घर का नमक खाया है।"

बूढ़े ने ज़ोर से हँसकर कहा—"अग्नि की पूजा करनेवाले बेहराम को नमक वमक की क्या पाबन्दी है! तुम जैसे सौ की निन्यानवे नवयुवकों की मैंने बलि दी है। मेरे हाथ आये हो। तुम मेरे हाथ से नहीं निकल सकोगे। तुम अपने देवताओं को छोड़कर मेरी तरह अग्नि की प्रार्थना करो।"

"नीच कहीं का, यह क्या कह रहे हो तुम!" हसन ज़ोर से चिल्लाया।

तुरन्त बेहराम ने अपना रुख बदला और कहा—"तुम्हारी परीक्षा करने के लिए ही मैंने यह कहा था। बेटा, तुम परीक्षा में पास हो ही गये। एकान्त में, तुम्हें कीमती विद्या सिखाने के लिए, मैं यहाँ लाया हूँ। वह पहाड़ देख रहे हो न! उसकी चोटी बादलों से ऊपर है। इसलिए उसे बादलों का पहाड़ कहते हैं। हमें जो कुछ जड़ी बूटियाँ चाहिए, वे सब उस पहाड़ पर हैं। अब हमें उस पहाड़ पर चढ़ना होगा।"

हसन का सन्देह कुछ कम हुआ। उसने बेहराम से कहा—"वह पहाड़

तो दीवार-सा है हम उस पर कैसे चढ़ सकेंगे!"

"हमारे चढ़ने की कोई ज़रूरत ही नहीं है। हम पक्षियों की तरह वहाँ मँडरायेंगे। कहकर बेहराम ने अपनी पगड़ी में से, एक ताम्बे की तश्तरी निकाली। उस पर मुर्गे का नमूना था। उस पर कुछ अक्षर लिखे थे।

बेहराम ने जब उस तश्तरी पर अपनी अंगुली बजाई, तो तुरत धूल उठी और उस धूल में से, एक काला, पंखोंवाला घोड़ा दिखाई दिया। उसकी नाक में से अंगारे निकल रही थीं। बेहराम उस पर सवार हुआ, हाथ देकर, उसने हसन को भी घोड़े पर बिठाया, तुरत वह घोड़ा पंख फड़फड़ाता, आकाश में उठा, चुटकी भर में, वह पर्वत के शिखर पर मँडराने लगा।

उन दोनों के उतरते ही वह फिर गायब हो गया।

हसन को फिर सन्देह सताने लगा। जब उसने चारों ओर मुड़कर देखा तो वहाँ कोई अच्छी चूड़ियाँ न थी। बेहराम ने उससे कहा—"अब तुम्हें कोई पाजी नहीं बचा सकता। कैसे बचोगे!" वह ज़ोर से हँसा।

हसन को बड़ा गुस्सा आया। "नीचे, अल्लाह मेरा सहारा है। देख, अल्लाह की, मदद से मैं तुम्हारा क्या, करता हूँ।" कहकर, उसने बूढ़े के हाथ में से ताम्बे की तश्तरी छीन ली। दूसरे हाथ से उसने उसे पहाड़ पर से धकेल दिया। बेहराम हवा में मँडराता पत्थरों पर गिरा और चूरा चूरा हो गया। भूमि पर उस मान्त्रिक का अस्तित्व खतम हो गया। [अभी है]

माँ की बताई हुई बातें

"देखो बाबा, कृष्ण अपनी माँ की बात नहीं सुन रहा है, जिद कर रहा है।" बच्चों ने, बाबा से कृष्ण की शिकायत की।

"क्यों कृष्ण! यह सच है!" बाबा ने कृष्ण से पूछा।

"चाहे मैं कुछ भी करूँ, माँ मुझे रोकती है। पानी में खेलने के लिए मना करती है। बिल्ली की पूँछ पकड़ने नहीं देती। अमरूद के पेड़ पर चढ़ने से रोकती है।" कृष्ण ने अपनी माँ की शिकायत की।

"अरे, क्यों बिना किसी कारण के तुम्हें रोकेगी! तेरे भले के लिए ही तो वह रोकती है। तू बहुत छोटा है। तुम्हें कुछ नहीं मालूम, उस हालत में माँ जो कहे, सुनना ही तो ठीक है! मैंने तुम्हें कभी ऊँट के बच्चे की कहानी सुनाई थी। उस कहानी में...." बाबा ने कहा।

इतने में सब ने मिलकर एक साथ कहा—"बाबा, तुमने ऊँट के बच्चों की कहानी नहीं सुनाई थी। तुम झूठ कह रहे हो। ऊँट के बच्चे ने क्या किया था बाबा?" हर बच्चे ने एक एक बात पूछी।

बाबा ने अपनी सुँघनी निकाली। और कहानी सुनानी आरम्भ की।

किसी समय मारवाड़ देश के राजा ने, मेवाड़ देश के राजा के लड़के के साथ अपनी लड़की की शादी की। लड़की के साथ दहेज के तौर पर हजार ऊँट भेजने का निश्चय किया गया। जब लड़की के भेजने का समय आया, तो एक ऊँटनी को

बीमारी हो गई। यह सोच कि वह रास्ते में ही कहीं मर मरा न जाय उसके बच्चे को, हमारे ऊँट के तौर पर और ऊँटों के साथ भेज दिया।

उस बच्चे को अपनी माँ को छोड़कर जाना बिलकुल पसन्द न था। हमारे कृष्ण को ही देखो। माँ की बात सुनता नहीं है, तो भी माँ के न दिखाई देने पर किस तरह छटपटाता है। इसलिए उस ऊँट के बच्चे ने क्या किया, जानते हो! भाग गया और अपनी माँ के पास पहुँच गया।

तब बीमार ऊँटनी की बड़ी बुरी हालत थी। उसने अपने बच्चे से कहा—"बेटा, अब मैं बहुत दिन न जीऊँगी। तुम अपने भाई के पास जाओ। और हमेशा उसी के साथ रहो। अपने भाई से मिलने जाने के समय टीलों पर न सोना। उस जगह न सोना, जहाँ लोग पड़ाव करके गये हों। जब और ऊँटों से जा मिलो, तो बीच में ही चलना। आगे, पीछे न चलना। तुम हमेशा अपने भाई के साथ ही रहो। मेरे कहे पर तुम चलते रहे, तो तुम्हारा भला होगा।" यह सब समझाकर ऊँटनी मर गई।

जगह न सोने के लिए कहा था।" ऊँट के बच्चे ने सोचा।

अगले दिन ऊँट का बच्चा, झुन्ड में आ मिला। परन्तु माँ ने भाई के साथ झुन्ड के बीच में रहने के लिए कहा था। पर अब भी उसको माँ की बात पर पूरा विश्वास न हुआ था। इसलिए उसने झुन्ड के आगे आगे जाने की सोची। इस छोटे बच्चे को, रास्ते में रुकावट जान कर और ऊँट उसकी पीठ और पूँछ पर काटने लगे।

यह सोच कि आगे चलने से फ़ायदा न था, वह बिल्कुल पीछे चलने लगा। ऊँट हाँकने वालों की लाठियाँ उस पर पड़ने लगीं। यह सोच कि पीछे चलना भी ठीक न था, वह आगे आगे गया पर रास्ते में इतनी धूल थी कि वह उसके मुख और नाक में भर गई।

"....तो इसलिए माँ ने मुझे आगे और पीछे न चलने के लिए कहा था। भाई के साथ ही रहने के लिए कहा था।" यह सोचकर, ऊँट का बच्चा झुन्ड के बीच में, अपने भाई के साथ चलने लगा। तब वह आराम से चल सका। समय पर खाना और पानी मिला, भाई अपने साथ उसको रखकर, गप्प मारता, बिना किसी थकान के उसको ले गया।

बाबा ने यह कहानी सुनाकर कहा—"अरे इसलिए ही तो कहता हूँ कि तुम ऊँट के बच्चे की तरह शरारती हो। तुम भी अपनी माँ की बात सुनो तो आराम पाओगे।"

सब बच्चे "ऊँट का बच्चा, शरारती बच्चा।" मिला मिलाकर, कृष्ण को चिढ़ाने लगे।

ऊँट का बच्चा, कुछ देर माँ के लिए रोया। फिर वह ऊँटों के झुण्ड में अपने भाई से मिलने के लिए निकल पड़ा।

रास्ते में अन्धेरा हुआ। जब उसने सोने की सोची, तो उसको पास ही एक टीला दिखाई दिया। "माँ ने कहा था कि टीले पर न सोना, देखें, सोने से क्या होता है!" सोचकर, वह टीले पर सो गया। रात को ज़ोर से हवा चलने लगी। ऊँट के बच्चे को बड़े ज़ोर की सरदी लगी— "तो इसलिए माँ ने टीले पर न सोने के लिए कहा था!" ऊँट के बच्चे ने कहा।

अगले दिन भी वह चलता रहा। रात से समय एक जगह पहुँचा। वहाँ उसे ऐसी जगह दिखाई दी, जहाँ मनुष्यों ने पड़ाव किया था। "ऐसी जगह भी माँ ने मुझे सोने के लिए मना किया था। देखें, सोने से क्या होता है!" सोचकर ऊँट का बच्चा वहीं सो गया।

मनुष्यों के छोड़े हुए भोजन के लिए रात के समय कई जंगली जानवर आये। गीदड़ों का शोर और भेड़ियों का चिल्लाना सुन ऊँट इतना डर गया कि वह वहाँ से भाग निकला। "तो माँ ने इसलिए ऐसी

सीमन्तिनी

किसी ज़माने में चित्रवर्मा नाम का एक राजा हुआ करता था। उसके, आठ लड़कों के बाद एक लड़की हुई। उसका नाम उन्होंने सीमन्तिनी रखा और उसको बड़े लाड़ प्यार से वे पालने पोसने लगे।

तब ज्योतिषियों ने उसकी जन्म कुन्डली देखकर चित्रवर्मा को बताया कि वह विधवा 'होगी'। चित्रवर्मा को जब यह मालूम हुआ तो बड़ा दुखी हुआ। वह सीमन्तिनी को विधवा बनाये, या उसका विवाह करने की सोचने लगा।

यह भेद छुपा नहीं, यह सोचकर कि वह विधवा बनेगी, सीमन्तिनी, प्रति सोमवार व्रत करने लगी। शिव की पूजा करने लगी।

कुछ दिनों बाद, सीमन्तिनी का चन्द्रांगद नाम के निषध देश के राजकुमार के साथ विवाह हुआ। यह चन्द्रांगद नल दमयन्ती का पोता था और इन्द्रसेन का लड़का था। विवाह के बाद दामाद को चित्रवर्मा ने अपने घर रखा और उसकी हर तरह से रक्षा करने लगा।

एक बार जब चन्द्रांगद अपने परिवार के साथ नाव में कहीं जा रहा था, कि ज़ोर का तूफ़ान आया और नाव पानी में डूब गई। पानी में डूबे हुए चन्द्रांगद को कुछ नाग कन्याओं ने देखा और वे उसको पाताल लोक में ले गये। नागों का राजा, तक्षक, चित्रवर्मा का मित्र था। इसलिए चित्रवर्मा के दामाद चन्द्रांगद का उसने अच्छा आतिथ्य किया। अपने लोक में उसे तीन साल तक रखा।

जब नाव में गया हुआ उसका पति वापिस न आया, तो सीमन्तिनी ने अपने

अलंकार निकाल दिये। विधवा का वेश पहिन लिया। शिव की आराधना निष्ठा से करने लगी।

"मुझे आये हुए बहुत दिन हो गये हैं। मेरे लोग मेरे लिए शोक कर रहे होंगे। अब मुझे जाने दीजिये" चन्द्रान्गद ने तक्षक से कहा। वह नाग कन्याओं की सहायता से भूलोक में वापिस आ गया।

पति, पत्नी का एक दूसरे को पहिचानना मुश्किल हो गया। जब सीमन्तिनी को पता लगा कि उसका पति मरा न था, तो उसने सोचा कि शिव पूजा ने ही उसके पति को सुरक्षित रखा था।

नागलोक से वापिस आने के बाद, चन्द्रान्गद, सीमन्तिनी को साथ लेकर अपने नगर निषध को गया। वहाँ फिर उनका वैभवपूर्वक विवाह हुआ।

अब इस सन्तोष में कि उसका पति फिर मिल गया था सीमन्तिनी, सोमवार के व्रत के साथ विवाहित व्यक्तियों को दान आदि भी देने लगी। कितने ही विवाहित आते और उससे उपहार पुरस्कार आदि लेकर जाते।

विदर्भ देश में दो ब्राह्मण लड़के हुआ करते थे। एक का नाम सोमवन्त और दूसरे का सुमेध था। उन दोनों ने एक साथ अपनी शिक्षा पूरी की और अपने पिताओं से विवाह करने के लिए कहा।

"तुम्हारा विवाह करने के लिए मेरे पास पैसा नहीं है। राजा के पास जाकर, अपनी विद्या का प्रदर्शन करके, उसको खुश करके, रुपया कमाकर, तुम अपने विवाह कर लो।" उनके पिताओं ने कहा।

वे दोनों लड़के विदर्भ राजा के पास गये। उन्होंने उससे धन की सहायता माँगी। राजा ने हँसकर कहा—"यदि पैसा ही चाहते हो, तो गृहस्थी का वेष पहिनकर, निषध की रानी, सीमन्तिनी के पास जाओ। वह गृहस्थियों को बहुत-सा रुपया आदि, देती है।"

जब सुमेध आगा पीछा देखने लगा, कि मानो सोच रहा हो कि किस तरह धोखा दिया जाय, तो सोमवन्त ने कहा—"कोई बात नहीं। राजा की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्तव्य है।" फिर सोमवन्त ने स्त्री का वेष बदला। वह और सुमेध मिल कर यह अभिनय करते कि वे गृहस्थी हैं

सीमन्तिनी के सोमवार के व्रत में गये। जितने गृहस्थी आये थे, उन सब को सीमन्तिनी ने उपहार देकर भेज दिया।

"इससे पहिले कि हमारा भेद खुले हमारा निश्चय छोड़कर चले जाना अच्छा है।" सुमेध ने कहा। परन्तु सोमवन्त के लिए स्त्री का वेष निकालना मुश्किल हो गया, क्योंकि वह स्त्री हो गया था। सोमवती बन गया था। इस सोमवती को सुमेध पर प्रेम उमड़ आया और वे दोनों अपने घर चले गये।

जब उसका इकलौता, सोमवन्त, सोमवती बनकर, घर वापिस आया, तो उसका पिता, सारस्वत सब कुछ जान गया। वह सोच कि बच्चों को इस प्रकार की बेहूदी सलाह देनेवाला, वह विदर्भ का राजा ही इसके लिए जिम्मेवार था उस ब्राह्मण ने उस राजा के पास जाकर कहा—"तुम्हारे कारण, मेरा लड़का, लड़की बन गया है।" उसने जो कुछ हुआ था, उसके बारे में बताया।

विदर्भ राजा को आश्चर्य और शोक हुआ। उसने पार्वती परमेश्वर का ध्यान किया। पार्वती ने प्रत्यक्ष होकर पूछा—"क्या चाहिए?"

"कृपा करो कि सोमवन्त फिर से सोमवती हो जावे।" राजा ने कहा।

"यह असम्भव है। जिस समय सीमन्तिनी ने उसको स्त्री समझा था, उसी समय वह स्त्री बन गया था। सीमन्तिनी से जो गृहस्थी के रूप में उपहार लेते हैं, वे गृहस्थी होकर रहते हैं।" पार्वती ने कहा।

माता पिता भी क्या करते! उन्होंने सुमेध और सोमवती का विवाह कर दिया।

चोर पकड़ा गया

एक बार एक जहाज में बड़ी चोरी हो गई। कप्तान ने जिन जिन पर उसको सन्देह था, उनको ले आकर, अकबर के सामने पेश किया और उससे अर्ज किया वह फैसला करे। जब अकबर उनमें से चोर का पता न लगा सका, तो बीरबल को उसने यह काम सौंपा।

चोर को पकड़ने के लिए बीरबल ने एक चाल सोची। उसने कुछ चूर्ण-सा लाकर हरेक के हाथ में और सिर पर रखा। "इस चूर्ण को तुम अपने थूक से गीला करके मुझे दो। तुम में कौन चोर है, मैं तुरत मालूम कर लूँगा।

सब ने अपने थूक से हाथ में रखे चूर्ण को गीला किया। पर जो असली चोर था, उसका मुख डर के कारण सूख गया था, इसलिए वह चूर्ण को गीला न कर सका। जब उससे पूछताछ की गई, तो वह ही असली चोर निकला, यह मान गया। चूँकि बीरबल ने चोर को पकड़ा था, इसलिए अकबर ने उसको ईनाम भी दिया।

ठग

गोलमटोल भीम को अक्लमन्द बनाने के लिए महालक्ष्मी ने बहुत कोशिश की, पर वह अपनी कोशिश में कामयाब नहीं हुई। इसलिए उसने अब भीम में दैवभक्ति पैदा करके उसकी बुद्धि बढ़ाने की व्यवस्था की। पत्नी की सलाह पर भीम रोज़ शाम गाँव के बाहर के मन्दिर में जाता और भगवान को नमस्कार करके चला आता।

इस बीच वहाँ एक ठग आया। तालाब के किनारे पेड़ के नीचे मुनि का भेस बदलकर गाँव की परिस्थितियों को देखने लगा।

इस ठग ने भीम के बारे में भी मालूम किया। भीम ज़मीन्दार का जमाई था और नादान था। एक दिन जब भीम मन्दिर की ओर जा रहा था, तो ठग ने उसे देखकर कहा—"क्यों बेटा भीम, आ रहे हो!"

वह देखने में तो मुनि-सा मालूम होता था और उसको उसने उसके नाम से भी पुकारा था। इसलिए भी क्षण भर में उस मुनि पर भक्ति करने लगा। उसके पास जाकर साष्टांग नमस्कार करके पूछा—"क्यों स्वामी!"

"बेटा, मैंने सुना है कि तुम भगवान के दर्शन के लिए छटपटा रहे हो, इसलिए रोज़ मन्दिर आ जा रहे हो। तुम्हारी भक्ति बड़ी प्रभावशाली है। पर मन्दिर में बेटा, तुम्हें भगवान के दर्शन कैसे होंगे? मन्दिर में भगवान की मूर्ति ही है, भगवान नहीं। मैंने तुम्हें भगवान को साक्षात् दिखाने के लिए बुलाया है। क्या तुम सचमुच भगवान के दर्शन करना चाहते हो?"

"और क्या स्वामी ! भगवान कहाँ है ? कैसे दिखाई देता है ?" भील ने ठग से पूछा ।

"वे मेरे हाथ में हैं, वे मेरे कहने पर आते हैं । उनको देखकर मेरी सब इच्छायें पूरी हो जाती हैं । तुम भी तर जाओगे । जो मैं कहूँ, वह करो ।" ठग ने कहा ।

"मैं वही करूँगा ।" भील ने कहा ।

"तो सुनो, अपना कुरता उतारकर यहाँ रख दो । तुम अपनी अंगूठी, सोने का कमरबन्द और ये सोने की माला उतारकर तालाब में डूबकर रहो । थोड़ी देर में तुम्हें देवता दिखाई देंगे ।" ठग ने कहा ।

भील मान गया । उसने अपने आभूषण उतार दिये । कुरता उतारकर उन सबको किनारे पर छोड़कर तालाब में कूदकर उसी में डूबकर रहा । भील के तालाब में उतरते ही ठग उसका कुरता और गहने लेकर चम्पत हो गया ।

इतने में भील को एक ख्याल आया । वह यह कि यदि देवता उसे दिखाई दिये, तो वह अकेला ही उसे देख रहा होगा । उसकी पत्नी नहीं देख पायेगी । वह

अन्याय था। मुनि की आज्ञा लेकर वह महालक्ष्मी को भी छुड़ा लेना चाहता था। वह सोचता था पानी से जो उठा, तो उसने मुनि को भागते हुए देखा।

"स्वामी, स्वामी, जरा ठहरिये, एक बात है।" चिल्लाता, भीम ठग के पीछे भागा। भीम की आवाज सुनकर ठग और जोर से भागने लगा।

भीम पहलवान था, दौड़ता भी तेज था। इसलिए जल्दी ही उसने ठग को पकड़ लिया। "आप शायद देवताओं को बुलाने के लिए जा रहे हैं। कोई जल्दी की बात नहीं है इसमें। जरा ठहरिये तो।"

ठग का दिल धकधक कर रहा था। उसने अपने हाथ से भीम का कुरता, उसके गहने छोड़ दिये और उसका हाथ छुड़ाकर जोर से भागने लगा।

"स्वामी, मेरी बात बिना सुने आप क्यों भागे जा रहे हैं! आपको इतनी जल्दी मुझ पर कैसे गुस्सा आ गया!" कहता, भीम ठग के पीछे भागा।

उनका शोर शराबा सुनकर, मन्दिर में से लोग भागे भागे आये और ठग को रोका। भीम ने भी उसको तब तक पकड़ लिया था। पांच वालों ने उसकी नकली दाढ़ी मूँछ भी निकाल फेंकी और यह साबित कर दिया कि वह चोर था। पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि वह बड़ा चोर था और आसपास के गाँवों में उसने बहुत-सी जगहों पर चोरियाँ भी की थीं। इतने बड़े चोर को जमींदार के जमाई ने पकड़ लिया था इसलिए आस पास के गावों के लोग, उसकी बहुत सालों तक तारीफ करते रहे।

नाग मुकुट

किसी मिथिलदेश में एक राजा था। उसके एक लड़की थी। कोई लड़का न था। उसने बहुत-सी देवी देवताओं को रिझाया। पर उसके कोई पुत्र नहीं हुआ। इसलिए वह उस लड़की को ही लड़का समझकर, उसका बड़े लाड़ प्यार से लालन पालन करने लगा।

एक बार, बाप बेटी, जब टहलने जा रहे थे, तो उन्होंने रास्ते में एक बुढ़िया को, एक साँप को दुलारते पुचकारते देखा। यह देख राजकुमारी ने कहा—"छी, छी, कितना गन्दा काम है!" यह सुन बुढ़िया गरजा उठी। "क्यों तुम ने इस पापी को देखकर नफ़रत की है? इसलिए तुम भी इसी की तरह जीओ...." यह कहकर उसने अपने दाहिने हाथ से, एक डंडे से राजकुमारी को छुआ।

राजकुमारी साँप बन गई फिर उसका दयनीय शक्ल बनाये, पिता की ओर देखने लगी। पर बुढ़िया ने तब भी उसे न छोड़ा। "तुम्हें अब पिता से क्या काम! जाकर साँप की तरह जीओ।" कहकर उसने फिर साँप को डंडे से छुआ। वह साँप वहाँ से तुरत चला गया।

तब तक राजा स्तब्ध खड़ा था। फिर उसने गुस्से में तलवार निकालकर बुढ़िया को मारना चाहा। बुढ़िया न डरी, उसने डंडा ऊपर करके कहा—"खबरदार, तुम्हारी भी हालत वही होगी, जो तुम्हारी लड़की की हुई है।" उसने डराया।

जब गुस्से से काम न बना, तो राजा गिड़गिड़ाने लगा। बुढ़िया को उसने कई तरह से मनाकर देखा। "मैं मन्त्र लगा

ए. कोदनवन

ले सकती हूँ पर उनको छुड़ा नहीं सकती। मैं तुम्हारी लड़की को, साँपों की रानी बना सकती हूँ। तब उसका जीवन कुछ और थोड़ा-सा अच्छा होगा। उसके लिए एक छोटा-सा मुकुट बनवाकर, तीन दिन बाद यहीं आकर मुझे दो। तुम्हारी लड़की जब तक वह मुकुट पिघल पिघला न जायेगा, तब तक साँप के रूप में रहेगी। फिर वह लड़की हो जायेगी।" राजा ने घर जाकर एक छोटा-सा मुकुट बनवाया और बुढ़िया को लाकर दिया। वह राजकुमारी के पास पहुँचा दिया गया! उस मुकुट का महत्व

सब को मालूम हो गया, जहाँ वह रखा जाता, वहाँ कोई कमी न रहती। यदि अनाज की कोठरी में उसे रखा जाता, तो कितना भी अनाज उसमें से लो, वह कम न होता। यदि पैसे के बीच में उसे रखा जाता, तो पैसा कम न होता। इसलिये कई ने उस मुकुट को पाने की कोशिश की।

एक दिन एक गरीब किसान जंगल में से जा रहा था, कि उसे प्यास लगी। वह एक झरने में पानी पीने के लिए गया। उसे पानी में एक बड़ा साँप तैरता दिखाई दिया। झरने के पास उसे एक मुकुट चमचमाता दिखाई दिया। यह सोच कि यह मुकुट नाग का ही होगा, उसे लेकर अपने रास्ते पर चला गया। जल्दी ही उसने देखा कि एक बड़ा साँप और कई छोटे साँप उसका पीछा कर रहे थे। वह बड़े पेड़ पर चढ़ गया। पेड़ की जड़ के पास ही साँप फुंकार रहे थे। इसलिए वह पेड़ पर से उतर भी न सका।

इतने में उस तरफ कोई भी आया, उसने पूछा—"क्यों भाई, पेड़ पर क्यों

चढ़े हुए हो!" उसने जो कुछ हुआ था उस स्त्री को सुनाया—"तुम्हारा साँप क्यों नहीं कुछ बिगाड़ सकते!" किसान ने पूछा। "मैं साँपों का मन्त्र जानती हूँ। मुझे यदि नाग मुकुट दिया, तो मैं इन साँपों को भेज दूँगी।" उस स्त्री ने कहा।

"यह बात बाद में देखेंगे, पहिले साँपों को भेज दो।" किसान ने कहा। उस स्त्री ने कोई मन्त्र गुनगुनाया और साँप अपने रास्ते चले गये। फिर किसान ने पेड़ से उतरकर कहा—"मुझ पर गृहस्थी का भार है इस मुकुट से मुझे फायदा होगा। चाहो तो तुम भी अपने लोगों के साथ जाकर मेरे घर ही रहो। मैं तुम्हें कोई कमी न होने दूँगा।" उस स्त्री को मानना पड़ा। वह अकेली स्त्री थी।

किसान ने मुकुट को कुछ दिन रखा। उसके घर में लक्ष्मी का वास रहा। वह स्त्री यह न जान सकी कि मुकुट कहाँ रखा था। आखिर वह जान गई कि वह कहाँ रखा था और किसान को घर में न देखकर, वह उसको लेकर चली गई और किसान उसका घर न जानता था।

अब इस स्त्री का भाग्य खुला। उस स्त्री ने इस मुकुट को अनाज की कोठरी में रखा और अनाज बेचकर, जो कम ही न होता था, उसने बहुत-सा रुपया बनाया। पर जब उसने एक दिन अनाज पिसवाने के लिए पनचक्की भेजा, तो मुकुट भी उसके साथ चला गया।

जब पनचक्की के मालिक ने अनाज पीसना शुरू किया, तो बहुत पीसने पर भी अनाज कम न होता था। उसने सोचा कि जरूर इसमें कोई रहस्य था। उसने जब इधर उधर खोजा, तो उसको नाग मुकुट दिखाई दिया। उसने उसे ले जाकर अपने सन्दूक में रखा। अगले दिन स्त्री ने आकर झगड़ा किया कि उसका मुकुट अनाज के साथ चक्की आया था; पनचक्की के मालिक ने कहा कि वह कुछ न जानता था। स्त्री ने बहुत खोजा, पर उसे जब मुकुट न मिला, तो वह निराश हो चली गई।

अगले दिन उसे एक ख्याल आया कि मुकुट को चक्की में ही रखकर, थोड़ा-सा अनाज रखकर, बहुत-सा अनाज बनाया जा सकता था। उसे बेचकर बहुत-सा रुपया कमाया जा सकता था। कुछ दिन तक वह यों अनाज बेचकर, रुपया बनाता रहा। पर एक दिन आफत आ पड़ी। अनाज के साथ मुकुट भी चक्की में चला गया और चूरा चूरा हो गया।

नाग मुकुट के नष्ट होते ही, राजकुमारी, जो नागों के रानी के रूप में जी रही थी, तुरत फिर से राजकुमारी बन गई। वह अपने पिता के पास चली गई और अपने योग्य वर ढूँढकर उससे विवाह करके सुख से जीने लगी।

आरण्य काण्ड

फिर रावण अन्तःपुर से बाहर आया। छँटेकढ़े आठ राक्षसों को बुलाकर उसने कहा—"तुम हर तरह के हथियार लेकर जनस्थान को जाओ। वहाँ कभी खर रहा करता था। वहाँ क्योंकि सब राक्षस मर गये हैं, इसलिए अब वहाँ कोई नहीं है। खर, दूषण और राक्षसों को राम ने मार दिया है। उस राम में और हम में अब बड़ा वैर हो गया है। इसलिए मैं जब तक उसे मार नहीं देता, तब तक आराम न करूँगा। इस बीच तुम ऐसा करो कि तुम उस जनस्थान में रहो और जब जब राम जो कुछ करे, उसकी सूचना मुझे देते रहो। तुम लापरवाही न करना, हमेशा राम को मारने की कोशिश करते रहना। क्योंकि मैंने तुम्हारी वीरता कई बार देखी है इसलिए ही मैं यह काम तुम्हें सौंप रहा हूँ।"

राक्षस चले गये। फिर रावण का मन सीता की ओर गया। वह तुरत अन्तःपुर वापिस आया। राक्षस स्त्रियों के बीच में सीता को दुखी देखा।

सीता ने बहुत मना किया, पर उसने जबर्दस्ती उसको ले जाकर अपना महल दिखाया। वह देवताओं के गृह की तरह था, उसमें हजारों स्त्रियाँ थीं। तरह तरह के पक्षी थे। जहाँ देखो वहीं मोतियों
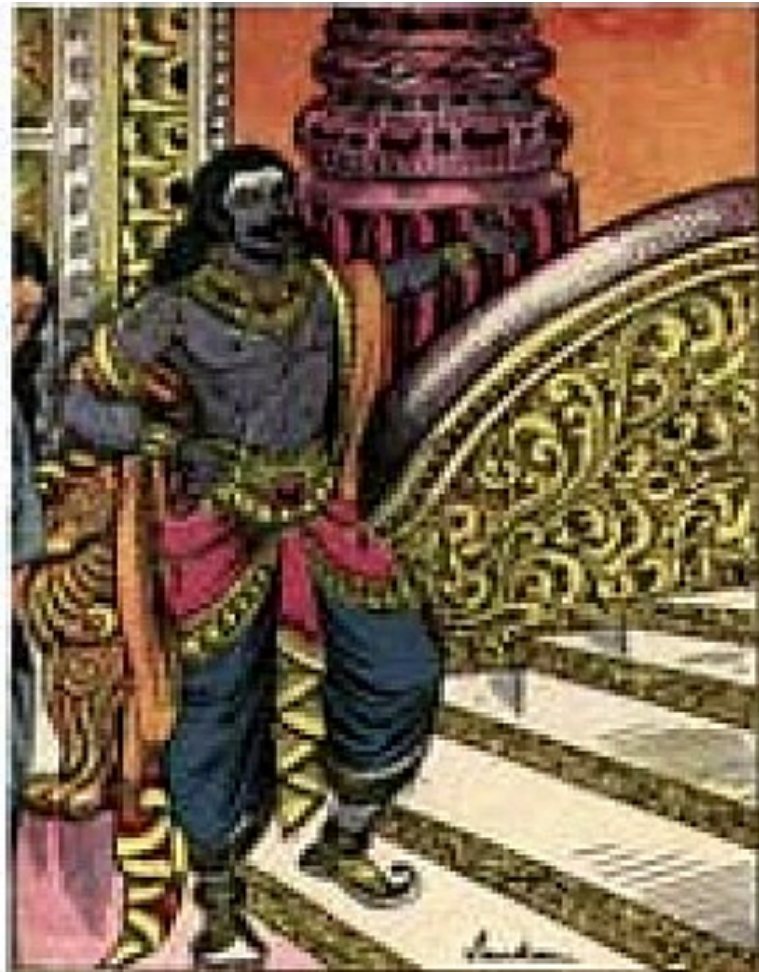
स्फटिक, सोने और चान्दी की बनी चीज़ें, वज्र और वैडूर्य से बने हुए स्तम्भ थे। सोने के द्वारवाले विचित्र सीढ़ियों पर वे दोनों चढ़े। सीढ़ियों के दोनों ओर चान्दी की खिड़कियाँ और हाथी के दान्त की खिड़कियाँ थीं। ऊपरवाली मंजिल पर सोने की खिड़कियाँ थीं। कहीं कहीं दीवारों पर रत्न जड़े हुए थे। अपने ऐश्वर्य से प्रभावित करने के लिए ही रावन सीता को वहाँ लाया था।

उसने सीता से कहा—"तुम मुझे मेरे प्राणों से भी अधिक प्यारे हो। यदि तुम

मेरी पत्नी बन गईं, तो तुमको और रानियों में सब-सा बड़ा बना दूँगा। इस महानगर को देवता भी नहीं जीत सकते हैं। तुमको यहाँ से ले जानेवाला तीनों लोकों में कोई नहीं है। मुझे भी अपना दास बनाकर, इस लंका पर राज्य करो। कभी कोई पाप किया था, इसलिए यह वनवास का कष्ट झेल रही थी, अब तुम पुण्य फल का उपभोग करो। विमान में आओ, हम जैसे चाहें, वैसे विचरें। शोक करती रहोगी, तो तुम्हारा सुन्दर मुँह भद्दा लगता है। इसलिए तुम शोक करना छोड़ दो।"

रावण ने बहुत कहा, पर सीता न मानी। रावन और अपने बीच में एक तिनका रखकर, उसकी ओर देखते हुए उसने कहा—"मेरे एक ही देवता हैं और वह मेरे पति राम हैं। उनके हाथ तुम अवश्य मारे जाओगे। मुझे चाहे बाँध दो, चाहे मेरे टुकड़े टुकड़े कर दो, मैं पतिव्रत नहीं छोड़ूँगी।"

रावण क्रुद्ध हो उठा—"तो मेरी बात सुनो, मैं तुम्हें बारह मास का समय देता हूँ। यदि तुमने इस बीच मेरी बात न

भाभी, तो रसोइयों से तुम्हारे टुकड़े कटवाकर, तुम्हें पकवा दूँगा।"

फिर उसने राक्षस स्त्रियों को बुलाकर कहा—"इन्हें अशोक वन ले जाओ। तुम इनके पास रहकर, इनकी रक्षा करो। समझा बुझाकर, डरा धमकाकर इनको रास्ते पर लाओ।"

राक्षस स्त्रियाँ सीता को अशोक वन ले गयीं। उस वन में पेड़ों पर हमेशा फल, फूल रहते। वन में पक्षी रहते। राक्षस स्त्रियों ने सीता को वहाँ पहुँचाया और उसके चारों ओर बैठ गईं। सीता दुखी और भयभीत थी। वह राम को याद करके अपना दुख रोक नहीं पाती थी।

और इधर राम हरिण के रूप में, मारीच को मारकर, आश्रम की ओर वापिस आ रहे थे कि एक गीदड़ चिल्लाया। इस अपशकुन के कारण राम भी चिन्तित हुए। कहीं सीता को ये राक्षस मारकर खा तो नहीं गये हैं! हरिण के रूप में आकर, मुझको आश्रम से दूर ले जाना, मरते समय आर्तनाद का सुनना, लगता है कि राक्षस कोई षड्यन्त्र कर रहे हैं—राम का यह विश्वास पक्का हो गया, वह आशा भी नहीं रही कि लक्ष्मण सीता की रक्षा कर रहा था, क्योंकि लक्ष्मण भागा भागा सामने से आ रहा था।

राम की चिन्ता दुगनी हो गई। उन्होंने लक्ष्मण का हाथ पकड़कर कहा—"यह क्या लक्ष्मण! सीता को आश्रम में अकेली छोड़कर आये हो! सीता को क्या हम फिर जीवित देख सकेंगे! यदि सीता को कुछ हो गया, तो मैं जीवित न रह सकूँगा। यदि मेरे मर जाने के बाद अयोध्या वापिस गये, तो शायद कैकेयी बड़ी खुश होगी कि आखिर उसकी इच्छा

पूरी हो गई है। उस राक्षस की आवाज़ सुनकर, क्या तुम जैसे शूर भी डर गये! मैंने क्योंकि खर, दूषण आदि राक्षसों को मार दिया है, इसलिए वे बदला लेना चाहते हैं। सीता को वे अवश्य मार देंगे। इतना दुख हो रहा है कि सूझ नहीं रहा है कि क्या करूँ!"

लक्ष्मण ने सीता ने जो कुछ कहा था, वह सुनाया और कहा कि मैं उनकी बातों से तंग होकर आया हूँ।

"सीता ने गुस्से में कुछ का कुछ कह दिया, पर तुम्हारा मेरी आज्ञा का उल्लंघन करना ठीक नहीं, जब तुम जानते थे कि मुझ पर कोई आपत्ति नहीं आ सकती थी, तो तुम्हें सीता के साथ रहना था।" राम ने कहा।

राम का भय ठीक निकला। सीता पर्णशाला में न थी। वह वहाँ न थी, जहाँ वह प्रायः घूमने जाया करती थी। आश्रम सूना-सा लगता था। वे दुखी हो उठे।

वे सीता को खोजते जंगल में निकल पड़े। "सीता कहाँ है! सीता कहाँ है!" उन्होंने वन के वृक्षों से अलग अलग पूछा। दुख के कारण वे विक्षिप्त से

हो गये। उन्हें भ्रम हुआ कि कभी उनको सीता दिखाई देती और उनकी पहुँच से फिर निकल जाती।

सीता को उन्होंने पुकारा, फिर उनको ऐसा लगा कि सीता कहीं छुपकर, उनको तंग कर रही थी। उन्होंने सीता को सामने आने के लिए कहा।

लक्ष्मण ने राम की दुस्थिति जानकर कहा—" भाई, शोक करने से कोई फायदा नहीं है। चलो, चारों ओर के जंगल को छान डालें। सीता इतनी दूर नहीं गई होगी।" उन्होंने आसपास का सारा जंगल अच्छी तरह छान डाला, पर सीता कहीं न मिली।

राम फिर आतुर हो उठे। उनके शरीर में शक्ति नहीं रही। यकायक वे निष्प्राण हो गिर से गये।

भाई को सीता के लिए रोता देख, लक्ष्मण ने उनको बहुत आश्वासन दिया। पर वे सब बातें राम के कान में नहीं पहुँची। उन्होंने लक्ष्मण से कहा—" मुझ जैसे को, जिसने सीता को खो दिया है, संसार कायर कहेगा। सीता के बिना, मैं अयोध्या कैसे जाऊँगा! सीता के बिना

मुझे अन्तःपुर में कैसे प्रविष्ट होऊँगा ! यह जानकर कि मैं आया हूँ, जब जनक महाराजा आयेंगे, तो उनको कैसे मैं अपना मुँह दिखाऊँगा ! सीता के बिना मैं जीवित नहीं रह सकता । इसलिए तुम मुझे यहीं छोड़कर, अयोध्या चले जाओ । भरत से ही राज्य करने के लिए कहो । हमारी माता से कहना कि मैं और सीता किस तरह नष्ट हो गये हैं ।" राम की यह हालत देखकर लक्ष्मण भी बड़ा दुखी हुआ ।

आखिर लक्ष्मण के कहने पर राम, सीता को और भी ध्यान से खोजने लगे ।

एक जगह उनको फूल दिखाई दिया । राम पहिचान गये । फिर कुछ दूरी पर, राक्षस के पद चिह्न और सीता के पद चिह्न दिखाई दिये । वहीं सीता ने राक्षस के पास से भाग जाने की कोशिश की थी । वहीं राम के चिन्ह, टूटा हुआ रथ, छाता, गधे, सारथी का शव, सोने का धनुष आदि दिखाई दिये । राम ने सोचा कि वह सीता का ही खून था ।

तब तक राम को राक्षसों पर कोई विशेष द्वेष न था । पर उन्होंने उस समय, राक्षसों का निर्मूलन करने का निश्चय किया । "यदि मेरी सीता को मुझे वापिस न दिया गया, तो तीनों लोकों को एक बाण में भस्म कर दूँगा ।" वे गरजे ।

लक्ष्मण ने राम को रोकते हुए कहा— "नहीं, यहाँ युद्ध हुआ है, एक ही आदमी के पद चिह्न दिखाई देते हैं । एक ही आदमी पर तीनों लोकों को नष्ट करना ठीक नहीं है । जिन किसी ने सीता का अपहरण किया है, आओ उनको खोजो ।"

इतने में उनको मरता जटायु दिखाई दिया । "यह लो, यहीं ही सीता को

लेकर, आराम से बैठा है। इसके प्राण ले लो।" कहते हुए राम ने जटायु को मारने के लिए बाण चढ़ाया।

"मुझे रावण ने मार ही दिया है, तुम क्यों मुझे मारते हो! वह सीता को ले जा रहा था, मैंने उसका मुकाबला किया। उसके धनुष, रथ और गधे और सारथी को मैंने नष्ट कर दिया है। उसने तलवार से मेरे पंख काट दिये। वह इसके बाद, सीता को लेकर आकाश मार्ग से चला गया।" जटायु ने कहा।

ये बातें राम को शुभवार्ता की तरह लगीं—क्योंकि राक्षसों ने सीता को मार कर नहीं खा लिया था। यह भी पता लग गया था कि उसको कौन उठाकर ले गया था। राम ने अपना धनुष छोड़ दिया और जटायु का आलिंगन करके रोये। उन्होंने जटायु से कहा—"मैंने रावण का क्या बिगाड़ा है! सीता का उसने क्यों अपहरण किया है! वह रहता कहाँ है!"

जटायु ने हाँफते हाँफते कहा—"वह रावण, इस ओर दक्षिण की तरफ़ गया है। वह कुबेर का भाई है।" यह कहकर, जटायु ने प्राण छोड़ दिये। कितने ही दिन, वह दशरथ के साथ रहा था, आखिर उसने राम के लिए अपने प्राण भी छोड़ दिये। शास्त्रोक्त रीति से राम ने जटायु की अन्त्येष्टि क्रिया की। पिंड दान के लिए केसरी, मृग माँस इकट्ठे किये। फिर राम और लक्ष्मण ने गोदावरी में स्नान करके, उसका जल तर्पण भी किया। फिर वे दोनों उसके बताई हुई दिशा की ओर सीता को ढूँढ़ने निकल गये।

१५. "पेट्रा"—शिलानगर

आज के जॉर्डन देश में "डेड सी" के दक्षिण में एक पुरातन शिला नगर है।

दो हजार वर्ष के पूर्व इस नगर के नबातियन परिपालक थे। १०५ में ट्रोजन नाम के रोमन सम्राट ने नबातियनों को पराजित किया और इस नगर को रोमन साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया।

यह नगर बहुत दिनों तक अज्ञात रहा। पिछली सदी में ही इसका पता लगाया जा सका। यह नगर पूरा का पूरा पहाड़ों में खुदा हुआ है। इसमें राजमहल, गोदाम, समाधियाँ, मन्दिर, सामान्य जनता के घर सभी गुफाओं के रूप में बने हैं। इस नगर में, जो कभी व्यापार की मंडी थी, आजकल कुछ "बिदाइन" जाति के लोग रहते हैं।

यह प्राचीन नगर इसलिए नहीं पता लगाया जा सका, क्योंकि इसके चारों ओर पहाड़ हैं। इस नगर में पहुँचने के लिए केवल एक तंग घाटी है। यह एक मील की है और उसके दोनों ओर कई सैकड़ों फीट ऊँचे पहाड़ हैं।

१. रघुनाथ राना, मदनीपुर
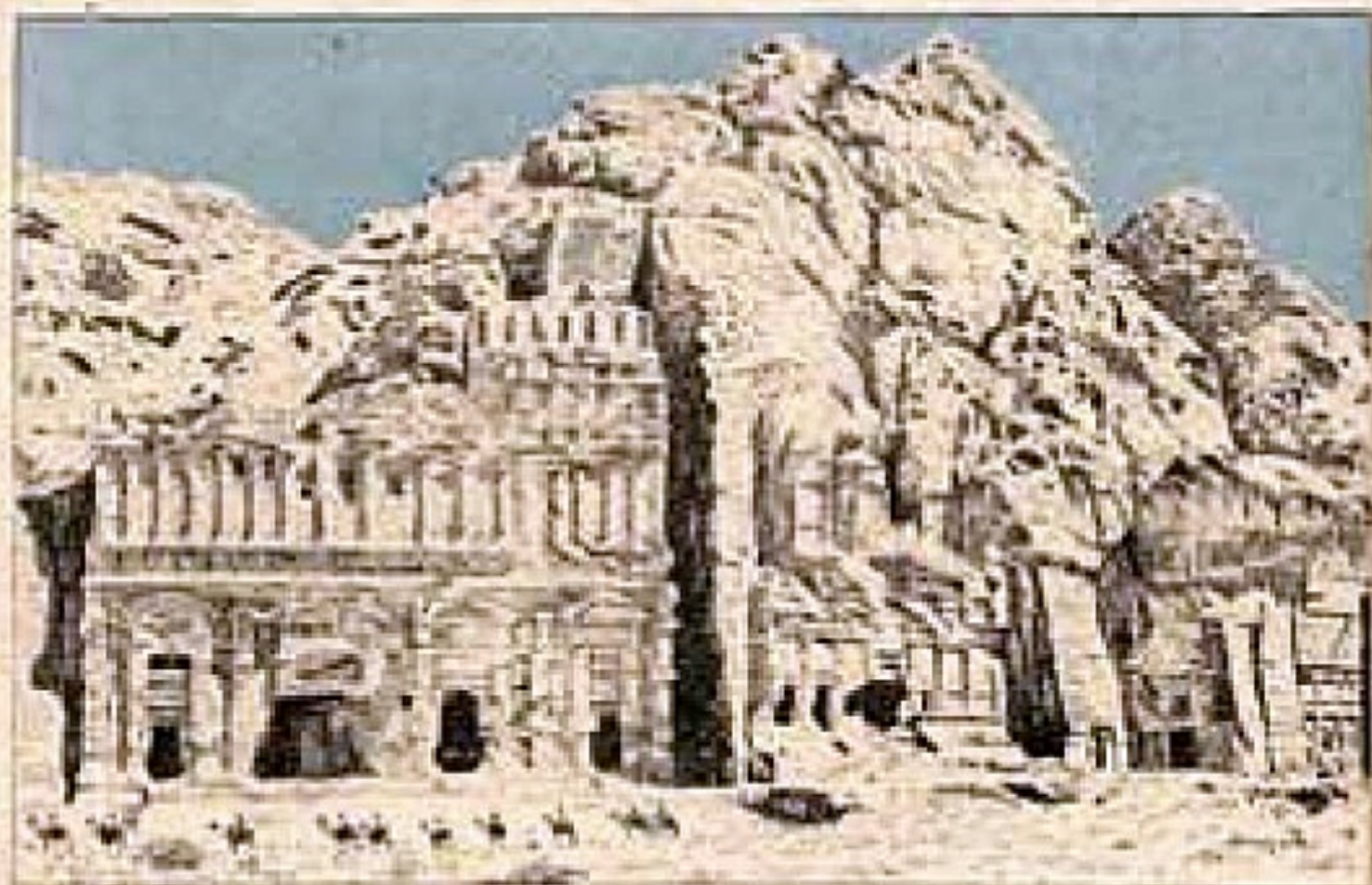
उपयुक्त परिचयोक्ति पहले से तैय्यार रखते हैं, या प्रेषकों के उत्तर पर विचार करते हैं?

न मालूम आपको कैसे यह सन्देह हुआ! प्रेषकों के शीर्षक ही चुने जाते हैं। पहिले कोई परिचयोक्ति तैयार नहीं की जाती।

२. विजयचन्द्र दास, पटना

क्या आप "चन्दामामा" में भारत चीन विरोधी लोगों स्तम्भ स्थापित करेंगे, जिससे आपके पाठक लड़ाई की स्थिति के बारे में जान सकें?

चन्दामामा समाचार पत्र नहीं है, आप ही बताइये कि कहानियों की पत्रिका में यह किस तरह सम्भव है?

३. चन्द्रशेखर, नई दिल्ली

क्या गलीवर की यात्रायें पूरी किताब के रूप में मिल सकती हैं?

हमारे यहाँ से तो नहीं।

४. गोपालचन्द्र कुशवाहा, फापीस्दुल्लापुर, टोला

क्या आप पुरस्कार परिचयोक्तियाँ बनानेवाले को, या फ़ोटो भेजने वालों को देते हैं?

प्रतियोगिता परिचयोक्तियों की है, फ़ोटो की नहीं। परिचयोक्ति भेजनेवालों को ही पुरस्कार दिया जाता है।

५. सुभाषचन्द्र शर्मा, जयपुरी

कौन-से धारावाहिक उपन्यास पुस्तकाकार में प्रकाशित हो चुके हैं?

केवल एक ही—"विचित्र जुड़वाँ"

६. जंग बहादुर सिंह, अमृतसर

क्या आप चन्दामामा के "भारत का इतिहास" स्तम्भ को कहानी की तरह मनोरंजक नहीं बना सकते ?

पर, तब कहानी और इतिहास में फ़र्क ही क्या रहेगा ? हम चाहते हैं कि भारत का इतिहास, इतिहास के रूप में ही पढ़ा जाये, कहानी रूप में नहीं ।

७. परमानन्द, जयपुर

क्या आप प्रश्नों का उत्तर जिस महीने में भेजते हैं उसी महीने में देते हो ?

हाँ, अगर उन्हीं पत्रों का जिनको हम उत्तर देने के लिए चुनते हैं ।

८. कुमारी डूरोथी घोष राय, बम्बई

क्या आप "चन्दामामा" बंगला में छाप सकते हैं ?

अभी तो नहीं ।

क्या "चन्दामामा" का होली अंक होगा ?

हम होली पर विशेषांक नहीं निकालते ।

९. मुरलीमाधव तिवारी, झरसगुडा

सर्वप्रथम चन्दामामा कौन-सी भाषा में प्रकाशित हुई थी ?

तेलुगु में ।

१०. लालसिंह भन्डारी, देहरादून

मैंने सुना है कि चन्दामामा अंग्रेज़ी में भी छपती है और केवल मद्रास में ही बिकती है, सच है ?

नहीं तो...गप्प है ।

११. जयप्रकाश नारायण, गया

आप कहते हैं कि चन्दामामा २० की तारीख तक तैयार हो जाती है, परन्तु मैं इसे अपने शहर में ३० की तारीख तक पाता हूँ, क्यों ?

आपको पहिले मिलनी चाहिए हम इस बारे में पूछताछ कर रहे हैं ।

Photo by Brahm Dev

पुरस्कृत परिचयोक्ति

धूप के नीचे, सर के ऊपर!

प्रेषक : रमेशकुमार माहेश्वरी-झाँसी

Photo by N. Rama Krishna

पुरस्कृत परिचयोक्ति

एक हैं नीचे, एक हैं ऊपर !!

प्रेषक : रमेशकुमार माहेश्वरी-झाँसी

बुरे ने भला किया *

[रामतीर्थ कथा]

एक महापुरुष सो रहा था कि उसको एक खराब सपना आया। सपने में उसे पोलीस ने चोरी करने के अपराध में पकड़ लिया था। वह वकीलों के पीछे फिरता रहा, अदालतों की धूल छानता रहा। पर कुछ हुआ नहीं। जो कुछ पास पैसा था, वह भी खत्म हो गया। मित्रों से उसने सहायता माँगी। उसने देवी देवताओं की सहायता के लिए प्रार्थना की। पर कोई काम नहीं हुआ। उसे जेल में डाल दिया गया। वह इस दुस्थिति में था कि ऊपर से एक साँप ने आकर काटा। उसे बड़ा डर लगा। दर्द हुआ। वह ज़ोर से कराहा और हड़बड़ाता नींद से उठा।

वह सब सपना था, उस पर कोई आपत्ति नहीं आयी थी। वह अपने घर में ही था। उसके परिवार के लोग उसके चारों ओर थे। उसका मन खुशी से भर गया। साँप के काटने ने खराब सपने से उसको छुड़ा दिया था। उसका दुख खत्म कर दिया था।

महाभारत

कृष्ण आदि जब द्वारका पहुँच रहे थे, तो वहाँ रैवतक महोत्सव हो रहा था। स्त्री, पुरुष आमोद में उन्मत्त मग्न रहे थे। जहाँ देखो, वहाँ आनन्द था।

कृष्ण ने अपने घर जाकर, माता पिता को नमस्कार किया। उनको देखने सब बाहर आये। वे बैठे हुए थे कि वसुदेव ने युद्ध की खबरें पूछीं। कृष्ण ने जान-बूझकर, अभिमन्यु की मृत्यु के विवरण छोड़कर, बाकी सब विवरण पिता को बता दिये।

यह सुनकर सुभद्रा ने कहा—"भाई, सब कुछ तो बता दिया है, पर अभिमन्यु की मृत्यु के बारे में क्यों नहीं बताया?" वह दुःख के कारण गिर-सी गई।

कृष्ण से अभिमन्यु की मृत्यु के बारे में सुनकर, वसुदेव भी शोक समुद्र में डूब गया। कृष्ण ने उनको तरह तरह से आश्वासन दिया। फिर वसुदेव, बलराम और कृष्ण, सात्यकी आदि ने अभिमन्यु के लिए तर्पण किये और ब्राह्मणों को सुवर्ण, वस्त्र आदि दान दिये।

इधर हस्तिनापुर में भी अभिमन्यु की मृत्यु का शोक मनाया जा रहा था। उत्तरा ने कई दिनों से भोजन छुआ न था, सबको यह भी भय था कि वह गर्भिणी भी थी। व्यास ने आकर कुन्ती, उत्तरा और अर्जुन से बात की और युधिष्ठिर को अश्वमेध यज्ञ करने का परामर्श दिया।

युधिष्ठिर को अश्वमेध यज्ञ के लिए धन की आवश्यकता थी। मरुत का धन हिमालय में था। उसको लाना था। उसको लाने के बारे में युधिष्ठिर ने भीम से सलाह माँगी। "शिव को प्रसन्न करके वह धन ले आये। जब तक शिव प्रसन्न न होंगे, तब तक उसकी रक्षा करनेवाले किंकर प्रसन्न न होंगे।" भीम ने कहा। बाकी पाण्डवों ने भी यही कहा।

एक दिन ब्राह्मणों का आशीर्वाद पाकर, युधिष्ठिर हिमालय के लिए निकल पड़ा। राज्य युयुत्सु को सौंपकर, धृतराष्ट्र, गान्धारी, कुन्ती से विदा लेकर, पाँच पाण्डव निकल पड़े। उनके साथ एक बड़ी सेना भी थी।

वे बहुत-सी नदी और पर्वत पार करके हिमालय पहुँचे। मरुत की धन राशि जहाँ थी, वहाँ पड़ाव की व्यवस्था उन्होंने की। फिर पाण्डवों ने ब्राह्मणों की सलाह पर उस रात को उपवास किया और दर्भ की चटाइयों पर सो गये।

अगले दिन युधिष्ठिर ने शिव, कुबेर आदि की पूजा की, उनके दिये हुए धन को अनेक घोड़े और हाथी और गाड़ी और मनुष्यों पर लदवाकर, पाण्डव हस्तिनापुर के लिए निकल पड़े।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: "CHAKRAPANI"